RNI .NO. MPBIL / 2013/ 54381

संपादकः- डॉ. देवेन्द्र मालवीय

11 वर्ष

दैनिक सद्भावना पाती

...प्राणियों में सद्भावना हो...

www.sadbhawnapaati.com Email: sadbhawnapaatinews@gmail.com इंदौर, सोमवार ●10 जून , 2024 वर्षः-12 अंकः- 43 मूल्य -1 रु. कुल पृष्ठ - 8

झमाझम बारिश से 'तरबतर' हुई मुंबई नगरिया

2 दिन पहले ही पहुंचा मॉनसून,खुशी से झूम उठे लोग

मुंबई (एजेंसी)। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में मानसून ने दस्तक दे दी है। रविवार की सुबह मुंबई में मानसून की पहली बारिश हुई। मेगा सिटी के काफी इलाकों में भारी बारिश हुई। इससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग के अनुसार मुंबई और उसके आसपास के इलाकों में पिछले 24 घंटों में अच्छी बारिश रिकॉर्ड की गई है। बारिश से पारा नीचे आया है। लोगों को भीषण गर्मी से राहत मिली। दक्षिणी पश्चिम मानसून के मुंबई पहुंचने की तारीख पहले 11 जून थी, लेकिन मानसून ने 9 जून को ही मुंबई में दस्तक दे दी। बारिश के दौरान मुंबई मेट्रोपॉलिटन एरिया में पालघर में भारी बारिश के कारण पालघर जिले में सड़क का एक हिस्सा धंस गया। इसके बाद रविवार सुबह मुंबई-अहमदाबाद राजमार्ग पर चार घंटे से अधिक समय तक यातायात प्रभावित रहा।

अभी और तपेंगे एमपी-यूपी समेत देश के सात राज्य

देश में हीटवेव का सिलसिला लगातार जारी है। शनिवार को 6 राज्यों- हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, गुजरात की 35 जगहों का तापमान 42 डिग्री से ज्यादा दर्ज किया गया। उत्तर प्रदेश का प्रयागराज 45.2ए सेल्सियस के साथ देश में सबसे गर्म रहा। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड और ओडिशा के कुछ स्थानों में आज से अगले 5 दिन तक हीटवेव चलने की संभावना है। वहीं, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश में अगले पांच दिन में तापमान में 3 से 5 डिग्री की बढ़ोतरी हो सकती है।

संक्षिप्त समाचार

मोदी 3.0 से पहले ही भारत ने दिखाए तेवर

● चीन के बधाई संदेश पर पढ़ाया शांति का पाठ

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी 3.0 की शुरुआत रविवार से हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार देश की बागडोर संभाल ली है। पीएम मोदी के शपथग्रहण कार्यक्रम के लिए बांग्लादेश पीएम शेख हसीना, मालदीव राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू हिस्सा लेने के लिए भारत पहुंचे। पीएम मोदी के तीसरे कार्यकाल के लिए चीन ने भी बधाई संदेश भेजा है। जवाब में भारत ने ड्रैगन को एलएसी पर तनाव और हिंसक घटनाओं को याद दिलाते हुए शांति का पाठ पढ़ाया। भारत ने कहा कि हमे पारस्परिक सम्मान, आपसी हित और

पारस्परिक भावना के आधार पर दोनों देशों को सामान्य बनाने का प्रयास जारी रखना चाहिए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल की यह टिप्पणी पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सीमा विवाद के चलते भारत और चीन के बीच संबंधों में ठहराव की पृष्ठभूमि में आई है। जायसवाल ने चीनी विदेश मंत्रालय द्वारा 'एक्स' पर प्रधानमंत्री मोदी के लिए पोस्ट किए गए बधाई संदेश का जवाब दिया। उन्होंने मोदी को जीत पर बधाई देने के लिए धन्यवाद दिया।

आरक्षक पर भीड़ का हमला, जान से मारने की कोशिश

● पीड़ित बोला अचानक लोग टूट पड़े, गला घोंट दिया, सिर कुचल जान लेना चाहते थे आरोपी

भोपाल। भोपाल के गोविंदपुरा थाना क्षेत्र में स्थित बरखेड़ा पठानी में कैब चालक ने शनिवार की देर रात आरक्षक को लापरवाही से ओवरटेक किया। पुलिसकर्मी ने चिल्लाकर वाहन को सही से चलाने की बात कही। इस पर आरोपी चालक रुका और बदसलूकी करने लगा। आरक्षक के विरोध करने पर आरोपी ने मारपीट शुरू कर दी। आरोपी पास में ही रहता था, मारपीट देख बस्ती के लोग निकल आए। उन्होंने भी आरक्षक के साथ

बेरहमी से मारपीट की। पत्थर, डंडे और बेल्ट से करीब दो दर्जन से अधिक युवकों ने हमला कर दिया। इसी बीच उनकी कॉलोनी के दो युवकों का वहां से गुजर हुआ। आरक्षक पर हमला कर रहे लोगों को उन्होंने रोकने का प्रयास किया तो भीड़ ने उनके साथ भी मारपीट कर दी। पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। गोविंदपुरा पुलिस के मुताबिक दीपक आचार्य (32) निवासी टैगोर नगर गोविंदपुरा डीसीपी जोन-2 श्रद्धा तिवारी के कार्यालय में साइबर शाखा में पदस्थ हैं। शनिवार की रात को वह घर लौट रहे थे। बरखेड़ा पठानी में स्थित बस्ती के सामने मेन रोड पर अपनी बाइक से गुजरे ही थे कि औरा कार जो टैक्सी नंबर पर थी के चालक ने उन्हें लापरवाही से ओवरटैक किया।

मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री

ईश्वर के नाम की ली शपथ

नड्डा-शिवराज कैबिनेट में शामिल, राजनाथ, शाह, गडकरी, जयशंकर और सीतारमण भी मंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने रविवार शाम को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। वे नेहरू के बाद ऐसा करने वाले दूसरे पीएम बन गए हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही मोदी ने लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली।

मोदी 2014 में लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पहली बार देश के प्रधानमंत्री बने थे। इसके बाद 17वीं लोकसभा के चुनाव में भारी बहुमत से जीत के बाद वह लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। नेहरू 1947 से स्वतंत्रता के बाद से सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। उनकी मृत्यु 27 मई 1964 को हुई थी और वह उस समय भी देश के प्रधानमंत्री थे। साल 1952 में हुए पहले आम चुनाव में जीत के बाद वह पहली बार प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे। इसके बाद 1957 और 1962 के आम चुनावों में भी कांग्रेस ने जीत दर्ज की और नेहरू फिर देश के प्रधानमंत्री बने। साल 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाई है। उसे 240 सीटें मिली हैं। हालांकि, भाजपा नीत राजग ने 293 सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया। इसके बाद राजग की बैठक में मोदी को पिछले दिनों भाजपा और राजग संसदीय दल का नेता चुना गया था। मोदी के बाद राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी, जेपी नड्डा और शिवराज सिंह चौहान ने शपथ ली। राष्ट्रपति भवन में 7 देशों के लीडर्स के अलावा देश के फिल्म स्टार भी इस समारोह में पहुंचे। इनमें अक्षय कुमार, शाहरुख खान, विक्रांत मेसी और राजकुमार हिरानी शामिल हैं। रिलायंस ग्रुप के चेयरमैन मुकेश अंबानी भी दिखे। मोदी ने रविवार सुबह राजघाट जाकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद वे अटल जी की समाधि और नेशनल वॉर मेमोरियल गए। सुबह मोदी ने अपने आवास पर संभावित मंत्रियों के साथ मीटिंग की।

मोदी-मोदी के नारे, झुककर नमस्ते...

शपथ ग्रहण कार्यक्रम में नरेंद्र मोदी सफेद कुर्ता पायजामा और नीले रंग की जैकेट पहनकर राष्ट्रपति भवन पहुंचे। समारोह में पहुंचकर उन्होंने झुककर सभी सांसदों और मेहमानों को नमस्ते किया। प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के लिए जैसे ही नरेंद्र मोदी उठे, मोदी-मोदी के नारों से पूरा समारोह स्थल गूंज उठा। शपथ लेने के बाद पीएम मोदी ने हस्ताक्षर किए और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को धन्यवाद दिया। इसके बाद पीएम मोदी अपनी सीट पर जाकर बैठ गए। उनके साथ-साथ एनडीए सरकार की नई कैबिनेट में शामिल होने वाले मंत्रियों को भी शपथ दिलाई गई। कैबिनेटर में शामिल होने वाले नए मंत्रियों में मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और पंजाब से आने वाले रवनीत सिंह बिट्टू का नाम शामिल है। रवनीत सिंह बिटटू को लोकसभा चुनाव में हारने के बावजूद मंत्री बनाया गया है।

मोदी कैबिनेट में एमपी का भी दबदबा, मिली कुल 5 जगह

भोपाल। मोदी मंत्रिमंडल में कौन-कौन चेहरे होंगे। इसकी तस्वीर अब साफ हो गई है। मध्यप्रदेश से 5 चेहरे शिवराज सिंह चौहान, ज्योतिरादित्य सिंधिया, डॉ. वीरेन्द्र कुमार खटीक, सावित्री ठाकुर और

दुर्गादास उईके को मोदी कैबिनेट में जगह मिली है। इन सभी ने मंत्री पद की शपथ ले ली हैं। ये सभी सांसद रविवार को नरेंद्र मोदी के आवास पर चाय पर बैठक में शामिल भी हुए। विदिशा सीट से सांसद चुने गए शिवराज सिंह चौहान पहली बार केंद्रीय मंत्री बने हैं। वहीं ज्योतिरादित्य सिंधिया और डॉ. वीरेंद्र कुमार खटीक मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में मंत्री थे।

उन्हें इस बार फिर मौका मिला है। वहीं बैतूल से सांसद दुर्गादास उईके और धार से सांसद सावित्री

● **शिवराज केंद्र में पहली बार बने मंत्री, सिंधिया, वीरेंद्र खटीक, सावित्री ठाकुर, दुर्गादास उइके भी शामिल**

ठाकुर भी पहली बार केंद्र में मंत्री बनाई गई हैं। इनमें से तीन सांसदों को कैबिनेट मंत्री तो दो सांसदों का राज्य मंत्री बनाया गया है। मध्यप्रदेश से इन 5 चेहरों में दो ओबीसी, दो एसटी और एक एससी वर्ग से आते हैं। इन 5 चेहरों से पूरे मध्यप्रदेश को कवर करने की कोशिश की गई है।

पटनायक बोले-हार के लिए पांडियन की आलोचना गलत

● वे उत्तराधिकारी नहीं, लेकिन उन्हें उनकी ईमानदारी के लिए याद रखा जाएगा

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री और बीजद अध्यक्ष नवीन पटनायक ने विधानसभा चुनाव में हार को लेकर पहली बार बात की। उन्होंने शनिवार 8 जून को मीडिया से बात करते हुए कहा कि मेरी हार के लिए वीके पांडियन की आलोचना करना दुर्भाग्यपूर्ण है। पटनायक ने कहा कि पांडियन ने आईएएस पद से इस्तीफा देकर बीजेडी जॉइन की और पार्टी के लिए बिना किसी स्वार्थ के काम किया। उन्होंने पार्टी में कोई भी पद नहीं लिया। कहीं से चुनाव भी नहीं लड़ा। एक ऑफीसर के रूप में उन्होंने 10 साल तक बहुत अच्छा काम किया। बीजद अध्यक्ष ने कहा- साइक्लोन और कोरोना काल में पांडियन का काम सराहनीय था। वे ईमानदार व्यक्ति हैं।

नए विमान की खरीदी की तैयारी में प्रदेश सरकार

भोपाल। मध्यप्रदेश सरकार नए विमान खरीदी की तैयारी में जुटी है। जिसे लेकर मुख्य सचिव वीरा राणा के साथ मीटिंग हो चुकी है। 2 कंपनियों की ओर से इसमें रुचि दिखाई गई है, जिस पर डॉ. मोहन यादव कैबिनेट अंतिम फैसला करेगी। साथ ही, 4 साल पहले दुर्घटनाग्रस्त राज्य सरकार के एयर क्राफ्ट को बेचने के लिए आफसेट प्राइज भी सरकार इसी माह तय करेगी। इसके लिए विमानन विभाग ने 13 जून तक विमानन कंपनियों से ईओआई के प्रस्ताव मांगे हैं। प्रस्ताव 14 जून को ओपन होंगे, और इसके बाद एयरक्राफ्ट बेचने की कम से कम कीमत तय हो जाएगी। विमानन विभाग ने एक्सप्रेशन ऑफ इंट्रेस्ट के लिए शुरू की गई प्रक्रिया के अंतर्गत राज्य सरकार के डैमेज एयर क्राफ्ट एसकेए बी-200 जीटी, वीटी एमपीक्यू के लिए तकनीकी और वित्तीय प्रस्ताव मांगे हैं। विभाग की ओर से 24 मई को इसके लिए प्रस्ताव ऑफर करते हुए 13 जून तक इसके लिए इच्छुक कंपनियों से प्रस्ताव देने के लिए कहा है।

● **4 साल से ग्वालियर में खड़े डैमेज एयर क्राफ्ट के लिए 14 जून को ओपन होगी ईओआई**

नीट विवाद | 1563 स्टूडेंट्स के अंकों की फिर से होगी जांच

ग्रेस मार्क विवाद में बड़ा फैसला, जांच के लिए पैनल गठित

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने नीट-यूजी में ग्रेस अंक विवाद को फिर से जांचने के लिए 4 सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। यह जानकारी शनिवार को नेशनल टेस्टिंग

● **एनटीए बोला-एक हफ्ते में आएगी रिपोर्ट, छात्रों का प्रदर्शन**

एजेंसी (एनटीए) ने दी। एनटीए के डायरेक्टर जनरल सुबोध कुमार सिंह ने बताया कि कमेटी से एक हफ्ते में रिपोर्ट देने को कहा गया है। इसके बाद यह तय होगा कि आगे क्या करना है। नीट-यूजी 2024 के रिजल्ट पर सवाल उठ रहे हैं। एनटीए ने 1563 स्टूडेंट्स को ग्रेस मार्क दिए हैं। आरोप है कि इससे 67 छात्रों की ऑल इंडिया रैंक 1 आई। नीट-यूजी 2024 में 24 लाख बच्चे बैठे थे। रिजल्ट 4 जून को आया था। डायरेक्टर जनरल सिंह ने बताया कि हमारी कमेटी 1563 कैंडीडेट्स और 6 सेंटर्स की जांच करेगी, जहां ग्रेस मार्क्स मिले हैं। हमारे पास सेंटर्स की मॉनिटरिंग के लिए सीसीटीवी हैं। सेंटर्स की रिपोर्ट्स भी हैं। ये सेंटर्स मेघालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा), दंतेवाड़ा, बालोद (छत्तीसगढ़), सूरत (गुजरात) और चंडीगढ़ के हैं। इस बीच रिजल्ट में गड़बड़ियों के विरोध में दिल्ली और कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई हैं। एग्जाम में टॉपर्स की बढ़ी हुई संख्या, मार्किंग स्कीम से अलग ग्रेस मार्क्स देना, आंसर की में बदलाव और एग्जाम से पहले ही पेपर लीक जैसे आरोप लगाए गए हैं। सिंह ने कहा, स्टूडेट्स को ग्रेस अंक देने से नतीजों या क्वालिफाइंग क्राइटेरिया पर कोई फर्क नहीं पड़ा है। उन्होंने बताया कि यह मसला सिर्फ 1563 स्टूडेंट्स का है। पेपर 23 लाख से ज्यादा बच्चों ने दिया था। 4750 सेंटर की बजाय सिर्फ 6 सेंटर का मामला है। कमेटी 1563 स्टूडेंट्स को दिए गए ग्रेस मार्क्स और टाइम लॉस की जांच करेगी। जरूरत पड़ी तो रिजल्ट संशोधित किया जाएगा।

व्हाइट हाउस के सामने 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों का प्रदर्शन

● **बाइडेन का खून से सना मुखौटा लेकर बोले- गाजा में मरे बच्चों की चीख इन्हें डराएगी**

वाशिंगटन (एजेंसी)। गाजा में इजराइल के हमलों के बीच शनिवार को अमेरिका में राष्ट्रपति के आधिकारिक निवास व्हाइट हाउस के बाहर 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों ने प्रदर्शन किया। लोग सिर पर हमास का पट्टा बांधकर फिलिस्तीन का झंडा लहराते नजर आए। इस दौरान प्रदर्शन कर रहे एक शख्स के हाथ में राष्ट्रपति बाइडेन का मुखौटा भी था, जो खून से सना हुआ था। प्रदर्शन कर रहे लोगों ने अमेरिका के झंडे में आग भी लगाई। लोगों के हाथ में कई बैनर और पोस्टर भी थे। इसमें बाइडेन पर इतिहास के गलत पक्ष में होने का आरोप लगाया गया। प्रदर्शनकारियों ने आजाद फिलिस्तीन के नारे लगाए।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत शीतला माता मातंगहट एवं सुनार नदी में चलाया सफाई अभियान

दमोह। कलेक्टर सुधीर कोचर के निर्देशन में जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जन अभियान परिषद् से जुड़े स्वयंसेवी संगठन, नगर विकास प्रस्फुटन समिति एवं नगर पालिका के सहयोग से शीतला माता मातंगहट की साफ-सफाई एवं सुनार नदी का सफाई अभियान चलाया गया, जिसमें नगर पालिका के अधिकारी कर्मचारी एवं मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद की ब्लॉक समन्वयक पुष्पा सिंह एवं नगर पालिका से कुलदीप पटेल, परामर्शदाता सुनील सेन, कृष्णकांत लखेरा नगर विकास प्रस्फुटन समिति के अध्यक्ष पुष्पेंद्र पांडे, सुरेश तिवारी, प्रदीप पांडे, शैलेंद्र राजपूत की मौजूदगी रही।

कलेक्टर के निर्देश पर विद्युत संबंधी शिकायतों के निराकरण के लिये संपर्क सूत्र जारी

दमोह। कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने आमजन की सुविधा को दृष्टिगत रखते हेतु विद्युत संबंधी समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए अधिकारियों-कर्मचारियों के मोबाईल/टेलीफोन नंबर जारी करने के निर्देश दिए थे। इसी कड़ी में अधीक्षण अभियंता एम.के. चौधरी ने दमोह जिले के विद्युत उपभोक्ताओं की विद्युत संबंधी शिकायतों के निराकरण के लिये संपर्क नंबर जारी कर दिये है।

दमोह शहर की विद्युत संबंधी शिकायत हेतु संपर्क सूत्र- दमोह शहर की विद्युत शिकायत हेतु दमोह नगर पालिका क्षेत्र अंतर्गत वितरण केन्द्र दमोह (शहर) कॉल सेंटर पर संपर्क करने मोबाईल नंबर 9425450826, 7648824281, सहायक अभियंता रोहित सोलंकी के मोबाईल नंबर-9425613885, 8770184905 तथा सहायक अभियंता (सुधार) सी.पी. चौपड़ा के मोबाईल नंबर-9425454967, 9828810340 पर संपर्क किया जा सकता है। इसी प्रकार मेंटेनेंस व्हीकल दमोह शहर क्षेत्र अंतर्गत दमोह नगर पालिका क्षेत्र के लिये ड्राईवर अभि सिंह मोबाईल नंबर-8982040812 एवं ड्राईवर अजय ठाकुर के मोबाइल नंबर 9131803728 पर संपर्क किया जा सकता है।

जिला स्तरीय क्लब फुट दोष जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

दमोह। आरबीएसके कार्यक्रम अंतर्गत 3 जून अंतराष्ट्रीय क्लबफुट दिवस से पूरे माह क्लब फुट दोष से पीड़ित बच्चों हेतु विशेष अभियान चलाकर बच्चों की पहचान कर उन्हें समुचित उपचार दिलाने का कार्य दमोह जिले में किया जा रहा है। डॉ. जलज बजाज ने बताया की 1000 लाईव वर्थ पर 1 से 2 प्रतिशत बच्चें क्लब फुट दोष के साथ पैदा होते है। ऐसे बच्चों को समय पर उपचार जैसे-प्लास्टर कास्ट सीटीईवी, सर्जरी व क्लबफुट जूते पहनाकर दोष को शत प्रतिशत दूर किया जा सकता है। जिला अस्तपाल दमोह में आरबीएसके व अनुष्का फाउडेशन के सहयोग से जिला स्तरीय क्लब फुट दोष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जिले से इलाज के लिये आये बच्चों एवं उनके परिजनों को क्लब फुट दोष की पहचान एवं उपचार के संबंध में जागरूक किया गया। इस दौरान अनुष्का फाउडेशन से आये जिला समन्वयक सत्यप्रकाश तिवारी द्वारा क्लबफुट दोष की पहचान एवं उसके उपचार के तरीको के बारे में पोस्ट के माध्यम से जागरूक किया गया। इस अवसर पर हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. राहुल अहिरवाल, डीईआईसी मैनेजर नरेश राठौर, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. रजनीश गांगरा, नवप्रकाश जैन, शुभम राठौर, नरेन्द्र रैकवार, अजय अहिरवाल के अलावा क्लब फुट रोग का इलाज कराने आये बच्चें एवं परिजन की उपस्थिति रही।

बीजेपी कार्यालय से लगी, नमामि गंगे अभियान से सौंदर्यकरण की हुई शुरुआत

पन्ना। नगर में कई छोटे-बड़े तालाब हैं, परंतु मिर्जा राजा की तलैया के नाम से प्रसिद्ध यह सरोवर का कंचन जल एकदम पीने योग्य मगर ज़रूरत इस बात की है कि अतिक्रमण की चपेट में हो तो अतिक्रमण हटाए जाने के साथ-साथ इसे स्वच्छ रखा जाये, परंतु कुछ आसपास में निवासरत् परिवार इसमें गंदगी फैलाते हैं जिससे पानी दूषित होना स्वभाविक है। तलैया का गहरीकरण के साथ-साथ चारों ओर के किनारों को पत्थरों की पिचिंग से पाटा जाये। केवल मंदिर के पास ही घाट बनाया जाये, वही भी जल ग्रहण करने के लिए न की नहाने और कपड़ा धोने के लिए सुविधाजनक न रहे। मंदिर की पूजा सामग्री भी तलैया में ना डाली जाये तो यह तलैया का जल निर्मल बना रहेगा और पीने के काम भी आ सकेगा। बताते चलें कि प्राचीन मिर्जा राजा की इस तलैया में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सदियों बीत जाने के बाद भी इसमें जलकुंभी का कोई नामोनिशां नहीं जिसमें कमल के फूल ही फूल दिखते हैं जिसकी पातलें भोजना भंडारों के समय उपयोग में लाई जाती हैं।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत फुटेरा तालाब में सफाई अभियान चलाया गया

जो पूरे 365 दिन यहां पर काम करते हैं, असली जल योद्धा तो ऐसे ही लोग हैं: कलेक्टर

दमोह। राज्य शासन का यह अभियान 5 जून से 16 जून तक दमोह के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में प्रतिदिन चलाया जा रहा है। यह अभियान सही अर्थों में जनता का अभियान है और जनता अभियान को चला रही है। इसी श्रृंखला में आज स्थानीय फुटेरा तालाब में नित्या प्यासी और नंदन चक्रवर्ती ने जो कदम उठाया है, इनके संयोजन में हम सभी जुटे हैं और काम कर रहे हैं।मुझे लगता है कि इसका श्रेय इन लोगों को जाना चाहिए। इस आशय के विचार आज प्रातः कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने राज्य सरकार के जल गंगा संवर्धन अभियान और जल सहेजने का एक बड़ा अभियान के तहत फुटेरा तालाब की सफाई के दौरान व्यक्त किए।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा मुझे बताया गया है कि चक्रवर्ती जी पूरे 365 दिन यहां पर काम करते हैं, असली जल योद्धा तो ऐसे ही लोग हैं। यहां प्यासी जी लगातार फुटेरा तालाब संरक्षण के लिए काम करते रहे हैं, इनकी पूरी टीम और उनके अलावा संत निरंकारी समाज और जन अभियान परिषद, बहुत सारे सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि यहां पर उपस्थित है, सभी ने सुबह 7 बजे से लेकर सुबह 9 बजे तक श्रमदान किया है। हमारा प्रयास रहेगा कि लगभग प्रतिदिन इस तरह का अभियान चलाया जाए। कल हम पुरेना तालाब पर काम करेंगे। अभी 16 जून तक यह कार्यक्रम होंगे फिर गंगा दशहरे का आयोजन होगा।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा दमोह में जितनी पुरातत्व संपदा है, तालाब भी यहां की पुरातात्विक धरोहर है। यदि

सही अर्थों में देखा जाए तो मंदिर और मॉन्यूमेंट्स ही नहीं तालाब भी यहां की प्राकृतिक संपदा है, जिसको सहेजने का काम समाज के नेतृत्व में करेंगे और हम लोग पीछे से सपोर्ट करेंगे इस पूरे अभियान में।

उन्होंने कहा आप सभी को इसका श्रेय जाता है। एसडीएम आर.एल. बागरी, सीएमओ नगर पालिका सुषमा धाकड़, नगर पालिका के इंजीनियर, नगर पालिका के सफाई कर्मी और बाकी सभी अधिकारी -कर्मचारी भी यहां पर उपस्थित है, इस अभियान में जनता का सहयोग करने के लिए। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम ऐसे ही काम करते रहेंगे तो कुछ दिनों में ऐसे ही सामाजिक जन चेतना फैलेगी की इन चीजों को साफ रखने के लिए कोई अभियान चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा जब पानी निर्मल होता है तो जलकुंभी नहीं होती है, इसका मतलब यह है कि इस पानी में कहीं से गंदा पानी मिलता है, सबसे पहले हमारा टारगेट है कि गंदा पानी सीवेज का या कोई और पानी इस तालाब में ना मिले। ऐसी स्थिति में सरकार की योजना अमृत-2 है, उसके अंतर्गत तीन तालाब लिए गए हैं और हम प्रयास करेंगे कि इस काम के साथ-साथ तलाब में मिलने जो गंदा पानी आ रहा है इसको डायवर्ट कर दें या फिर इसके लिए हम ट्रीटमेंट प्लांट लगा करके पानी को साफ करने का काम करेंगे। साथ में यह भी देखा जा रहा है कि जलकुंभी को स्थाई रूप से खत्म करने के लिए कोई और समाधान हो सकते हैं। यदि कहीं से इसका परमानेंट सॉल्यूशन मिलता है तो उस पर भी काम किया जाएगा।

कलेक्टर श्री कोचर ने जनमानस से कहा पर्यावरण, नशा मुक्ति, तालाबों- झीलों का संरक्षण अभी तक जो हमारा नॉरेटिव है, वह यह कहता है की कलेक्टर के नेतृत्व में अभियान चलाओ और समाज साथ में आए। समाज के नेतृत्व में अभियान चलाओ और कलेक्टर पीछे आए। जब तक कलेक्टर आगे रहेंगे, जब तक जिला प्रशासन आगे रहेगा तब तक ऐसे अभियानों का लॉन्ग टर्म सॉल्यूशन नहीं निकल पाएगा, जब समाज आगे आएगा तभी ऐसी समस्याओं का लॉन्ग टर्म सॉल्यूशन निकल पाएगा। उन्होंने सभी से आवाहन किया कि आप इसका नेतृत्व करिए हम पीछे से साथ में खड़े हैं और जैसे-जैसे आपके हाथ में नेतृत्व जाता जाएगा इनकी दशा और दशा अपने आप बदलने लगेगी।

नवरात्रि के 9 दिन देवी के अलग- अलग स्वरूपों की आराधना की जाती है: पं. चन्द्रगोपाल पौराणिक

दमोह। स्थानीय राजा मैरिज हाल में मां श्री सहस्त्रचंडी महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा हैं। जिसमें पूजन पाठ के उपरांत हवन शाम 6 बजे से 10 बजे तक किया जाता हैं। पं. चन्द्र गोपाल पौराणिक ने बताया कि नवरात्रि के 9 दिन देवी के अलग-अलग स्वरूपों की आराधना की जाती है। वहीं आपको बात दें कि नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा अर्चना की जाती है। देवी भागवत पुराण के अनुसार, मां दुर्गा का चंद्रघंटा स्वरूप शांतिदायक और कल्याणकारी है। वहीं ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं के मुख से जो ऊर्जा उत्पन्न हुई, उससे एक देवी का प्रादुर्भाव हुआ। जिनका नाम चंद्रघंटा पड़ा। चंद्रघंटा का अर्थ है, 'जिसके सिर पर अर्ध चंद्र घंटे के रूप में शोभित है, ऐसा है मां चंद्रघंटा का स्वरूप् अगर हम मां चंद्रघंटा के स्वरूप की बात करें तो

माता के गले में सफेद फूलों की माला सुशोभित हैं, साथ ही मां बाघ की सवारी करती है। चंद्रघंटा मां की 10 भुजाएं हैं। जिसमें वह कमल, धनुष, बाण, खड्ग, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा आदि शस्त्र माता हाथ में लिए हुए हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार जब महिषासुर ने तीनों लोकों में आतंक मचाना शुरू कर दिया तब देवताओं ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों से सहायता मांगी। देवताओं की बात को सुनने के बाद तीनों को बहुत क्रोध आया। क्रोध के कारण तीनों के मुख से जो ऊर्जा उत्पन्न हुई, उससे एक देवी का प्रादुर्भाव हुआ। देवी को भगवान शंकर ने अपना त्रिशूल और भगवान विष्णु ने अपना चक्र प्रदान किया। इसी प्रकार अन्य सभी देवताओं ने भी माता को अपने-अपने अस्त्र सौंप दिए। देवराज इंद्र ने देवी को एक घंटा दिया। इसके बाद मां चंद्रघंटा महिषासुर का वध करने पहुंची। महिषासुर का वध करने के लिए देवताओं ने मां का धन्यवाद किया। इसके बाद देवताओं को महिषासुर के आतंक से मुक्ति मिली।

इस अवसर पर पं. सुनील दुबे शास्त्री, कैलाश प्यासी, रामेश्वर गोस्वामी, नितिन शर्मा, आशीष कटारे, सुदर्शन पाठक, आशुतोष गौतम छोटू शास्त्री, सत्यम मिश्रा, राजेश तिवारी आज के यजमान कपिल खरे, नीलम चाचा, अभिलाषा श्रीवास्तव, वैजनाथ सोनी, छोटे शशीकांत सेवा भाव परिवार आप सभी से हवन कर धर्मलाभ अर्जित करें।

अपने किए व्यवहार के लिए मां से जरूर माफ़ी मांगूंगी

/**दमोह।** जिले में प्रशिक्षणरत 88 नवनियुक्त पटवारियों की लिए एक दिवसीय अल्प विराम आनंद सभा का आयोजन कलेक्टर सुधीर कोचर के मार्गदर्शन और डिप्टी कलेक्टर निकेत चौरसिया और नोडल अधिकारी डॉ कीर्तिकाम दुबे, एसएलआर सुरेका यादव द्वारा निर्देशित यह कार्यशाला आयोजित की गई। इस के प्रथम चरण में प्रार्थना के साथ प्रतिभागियों का परिचय प्राप्त करते हुए आनंद विभाग के वीडियो द्वारा विभिन्न गतिविधियों की जानकारी सहायक नोडल और मास्टर ट्रेनर प्राचार्य रमेश व्यास द्वारा दी गई। श्रीमती कमलेश शुक्ला पूर्व प्राचार्य एवं द्वारा मास्टर ट्रेनर सत्र की शुरुआत करते हुए जीवन में आनंद क्या है कैसे बढ़ता और घटता है? विषय पर प्रतिभागियों से चर्चा की। प्रशिक्षु पटवारी अभिलाषा मिश्रा ने बताया कि जब हम किसी की भलाई का कार्य करते हैं, उस समय जो भाव महसूस करते हैं। वही वास्तविक आनंद है। सत्य के द्वितीय भाग में रमेश व्यास द्वारा जीवन का लेखा-जोखा पर चर्चा की गई। जिसमें सहायता करने और पाने के साथ-साथ किसी को दुखित करने या स्वयं दुखित होने के गहन विषय को प्रश्नों पर लेकर प्रतिभागियों से उनके विचार जाने गई, ऐश्वर्या राय द्वारा बताया गया कि हमने मां का दिल दुखाया, उनकी बात नहीं मानी तब मुझे भी बहुत दुख हुआ और अब मैं अपने गलत व्यवहार के लिए माफी मांगूंगी। प्रतीक पटेल ने कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हुए बोला गया कि हम इस पृथ्वी के प्रत्येक करण के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए जिन्होंने हमारे जीवन को संवारने में सहायता की है। इस प्रकार इस सत्र में समस्त प्रतियोगियों द्वारा अपने जीवन में अल्पविराम की विधा को जानने में गहरी रुचि जाहिर की। निधि जैन ने अल्प विराम कार्यक्रम की सार्थकता को व्यक्त करते हुए सभी साथियों के दोबारा कार्यक्रम में जोड़ने की इच्छा व्यक्त की।

अनियंत्रित हो ट्रक ने तोड़ी तालाब की रैलिंग, तालाब में कूदा

टीकमगढ़। नगर में भारी वाहनों के प्रवेश पर पाबंदी है और इसके साथ ही ट्रैफिक पुलिस ने हैवी वाहनों का प्रवेश रोकने के लिए प्रमुख रास्तों पर नो एंट्री के बोर्ड भी लगा रखे हैं। इसके बाद भी हैवी ट्रक और डंपर प्रवेश कर रहे हैं। जिससे बार-बार हादसे हो रहे हैं।

ऐसा ही मामला रविवार सुबह महेंद्र सागर तालाब में देखने को मिला। जहां बोरियों से भरा एक ट्रक अनियंत्रित होकर रेलिंग तोड़ते हुए तालाब में जा घुसा। इस घटना में ड्राइवर तो बाल-बाल बच गया वहीं ट्रक सीढ़ियों से नीचे होते हुए तालाब में उतर गया। महेंद्र सागर बड़े तालाब की ओर सुबह से मॉर्निंग वॉक के लिए जाने वाले लोगों ने बताया कि रविवार सुबह जब वह तालाब की ओर घूमने के लिए तो महेंद्र सागर तालाब पर बने ताल कोठी भवन के ठीक आगे एक ट्रक तालाब में पड़ा दिखाई दिया। मौके पर मौजूद लोगों ने

बताया कि तेज रफ्तार ट्रक तालाब की बंधान पर बनी रेलिंग तोड़ते हुए सीधा अंदर घुस गया।

हादसा होते ही चालक ट्रक छोड़ मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना थाना कोतवाली पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची है। लोगों से पूछताछ के बाद पुलिस ने ट्रक को तालाब से बाहर निकालने के लिए क्रेन मौके पर बुलाई है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है।

वहीं आपको बताएं कि अभी कुछ दिन पूर्व पिछले मंगलवार को ताल दरवाजा मोहल्ले में एक अनियंत्रित ट्रक मकान में घुस गया था। इसके पहले भी पपौरा चौराहा और ताल दरवाजा मोहल्ला में इस तरह के हादसे हो चुके हैं। इसके बाद भी भारी वाहनों को शहर में प्रवेश करने से नहीं रोका जा रहा है। इस मामले में ट्रैफिक पुलिस का रवैया बेपरवाह बना हुआ है।

जिले की जनता अपनी-अपनी समस्याएं और शिकायतें लेकर आती हैं, यदि उनका निदान समय पर हो जाता है, तो यह प्रशासन का, सुशासन की दिशा में बढ़ाया हुआ एक बड़ा कदम-कलेक्टर कोचर

- **टोकन आधारित व्यवस्था में पहले आओ पहले पाओ के आधार पर मिलेगा टोकन**
- **कार्यालय प्रमुख जिला कार्यालय और विकासखंड कार्यालय में अनिवार्य रूप से जनसुनवाई करेंगे**

दमोह। निर्वाचन संपन्न होने के साथ आदर्श आचरण संहिता की अवधि समाप्त हो गई हैं। आगामी मंगलवार 11 जून से जनसुनवाई नियमित रूप से प्रारंभ हो जाएगी। जनसुनवाई को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का निर्णय लिया गया है, यही वह व्यवस्था हैं, जहां पर जिले की जनता अपनी-अपनी समस्याएं और शिकायतें लेकर आती हैं। यदि उनका निदान समय पर हो जाता है, तो यह प्रशासन का, सुशासन की दिशा में बढ़ाया हुआ एक बड़ा कदम है, इसलिए जनसुनवाई हमारा बहुत बड़ा फोकस एरिया है, इसको बहुत सुंदृढ़ बनाने का निर्णय लिया है। इस आशय के विचार कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने जनसुनवाई को लेकर व्यक्त किए।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा अगले 11 जून से प्रातः 10 बजे से लगातार जनसुनवाई शाम तक चलेगी। उन्होंने कहा पहले यह व्यवस्था थी की अलग-अलग विभागों के आधिकारी कलेक्टर कार्यालय में आकर बैठते थे, लेकिन अब शासन के निर्देशों के अनुरूप यह व्यवस्था करने के आदेश जारी कर दिए हैं कि जिला कलेक्टर कार्यालय के अलावा अधिकारी, कार्यालय प्रमुख जिला कार्यालय और विकासखंड कार्यालय में अनिवार्य रूप से जनसुनवाई करेंगे, वे वहीं रहेंगे, वहीं पर बैठकर जनसुनवाई करेंगे। कलेक्टर कार्यालय में जिला कलेक्टर और जिला कलेक्टर की अनुपस्थिति में अपर कलेक्टर या डिप्टी कलेक्टर जो ऑथराइज्ड होगें, वे जनसुनवाई करेंगे। इस प्रकार यह एक बड़ा परिवर्तन है जिसमें जिले के अधिकारियों को यहां पर नहीं बैठना होगा, वे अपने कार्यालय में बैठेंगे और वहीं पर लोगों की समस्याओं को सुनेंगे, इससे शासन के निर्देशों के अनुरूप विकासखंड स्तर तक लोगों की जनसुनवाई हो सकेगी और उनको जिले में अपनी समस्याओं को लेकर नहीं आना पड़ेगा।

कलेक्टर ने कहा एक दूसरा फायदा यह होगा कि जो लोग जिले में अपनी समस्या लेकर आते हैं उनके समाधान के लिए विकासखंड स्तर पर या दूसरे कार्यालय में तत्काल चर्चा की जा सकेगी और अधिकारी उनका समाधान करने की स्थिति में रहेंगे। यदि आवश्यकता पड़ेगी तो संबंधित आवेदकों को तुरंत उन अधिकारियों के ऑफिस भेजा जा सकेगा, जिससे उनका समाधान वे ऑफिस में रहकर कर सकेंगे।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा कुछ ऐसे विभाग है जिनके दफ्तर जिले में सभी जगह फैले हुए हैं, ग्रामीण विकास, राजस्व विभाग, नगरीय विकास और पुलिस इनके दफ्तर अलग-अलग जगह पर भी हैं, इन विभागों के एक-एक व्यक्ति को नोडल बनाया गया है और यह जो चार नोडल रहेंगे, यह यहां आएंगे उनके विभागों से संबंधित जो विषय हैं, वह कंसोलिडेटेड करके अपने पास से उनके पेपर को ले जाएंगे और कोऑर्डिनेटर करेंगे कि इन समस्याओं का समाधान जितना जल्दी हो सके, वे करेंगे।

उन्होंने कहा पुलिस विभाग, नगरीय विकास, राजस्व विभाग और ग्रामीण विकास के एक-एक व्यक्ति रहेंगे। एसडीएम जनसुनवाई का एक लॉगइन होता है और प्रतिदिन एसडीएम लॉगइन पर जो-जो उनके विकासखंड या अनुविभाग, तहसील स्तर पर जनसुनवाई में शिकायतें आयेंगी, एसडीएम का यह दायित्व होगा कि वह अपनी लॉगइन से इन सभी की एंट्री करायें। जनसुनवाई में जितने भी शिकायतें आती हैं वह ऑटोमेटेकली सीएम हेल्पलाइन में जुड़ जाएंगी, इस प्रकार के स्ट्रक्चर पर हम काम करेंगे। सभी संबंधितों को निर्देशित कर दिया गया है की जनसुनवाई में जितने लोग भी आते हैं विकासखंड कार्यालय और जिला के अन्य कार्यालय में प्रातः 10 बजे से दोपहर 01 बजे तक जनसुनवाई होगी, कलेक्टर कार्यालय में जितने हितग्राही आएंगे उनके हिसाब से जनसुनवाई और लंबी भी चल सकती है। यदि किसी मंगलवार के दिन अवकाश होता है, तो अगले दिन जनसुनवाई की जायेगी, इसके लिए समय पर लोगों को अवगत कराया जाएगा और सभी कार्यालय को निर्देशित किया गया है कि जो भी आवेदक आयेंगे उन्हें सम्मानपूर्वक बैठने, पीने के पानी की और अन्य बुनियादी सुविधाओं सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाए। प्रयास होगा की समस्याओं का निराकरण जितना जल्दी हो सके और पात्रता के अनुसार यदि मौके पर ही हो सके तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता है। जनसुनवाई को सुशासन का एक बहुत बड़े उपकरण के रूप में जिले में एस्टेब्लिश कर पाए और बेहतर से बेहतर लोगों को सुविधा दे पाए।

उन्होंने कहा प्रयास है एक व्यक्ति यदि एक बार जनसुनवाई में आता है तो उसको दोबारा जनसुनवाई में लौटकर न आना पड़े, हम उसका समाधान इस जनसुनवाई में ही निकालें यदि उसका समाधान संभव है तो, इसलिए यह व्यवस्था की गई है।

उन्होंने बताया कलेक्टर कार्यालय में ग्राउंड फ्लोर पर जनसुनवाई रूम में जिला कलेक्टर सुबह से जनसुनवाई के लिए बैठेंगे। अभी तक यह होता था कि कॉरिडोर में लोग बैठते थे, अब कॉरिडोर की बजाय जहां जनसुनवाई हो रही है वहीं पर चेयर्स लगाई जाएगी, उसी कक्ष में सभी आवेदक बैठेंगे, वहां पर उनके लिए पेयजल, शौचालय और सारी मूलभूत व्यवस्थाएं हैं, वह माकूल की जाएंगे और कोशिश की जाएगी एक-एक आवेदन को ध्यान से सुना जाए और उनको पर्याप्त समय दिया जाए, इसलिए टोकन आधारित व्यवस्था रहेगी। पहले आओ पहले पाओ के आधार पर टोकन मिलेगा, सभी लोग अपनी सीट पर धैर्य से बैठेंगे, अपनी बारी आने का इंतजार करेंगे जैसे ही उनके टोकन की पुकार लगेगी वह आकर कलेक्टर के सामने अपनी बात रख सकते हैं, इसके लिए कलेक्टर की कुर्सी के सामने उनकी कुर्सी लगाई जाएगी और वह अपनी बात कलेक्टर के समक्ष रख सकेंगे।

जेईई एडवांस्ड 2024-

इंदौर के वेद लाहोटी ऑल इंडिया टॉपर

इंदौर (नप्र)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मद्रास (आईआईटी मद्रास) ने जेईई एडवांस्ड 2024 का रिजल्ट जारी कर दिया है। इंदौर के वेद लाहोटी ने ऑल इंडिया टॉप किया है। उन्हें कुल 360 में से 355 मार्क्स मिले हैं। एमपी जोन में मान्य जैन ने टॉप किया है। उनकी ऑल इंडिया रैंक 75 आई है। रिजल्ट आधिकारिक वेबसाइट पर जारी किया गया है। उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट पर अपना रिजल्ट चेक व डाउनलोड कर सकते हैं। रिजल्ट चेक करने के लिए उम्मीदवारों को अपने लॉगिन क्रेडेंशियल्स जिसमें एनरोलमेंट नंबर और डेट ऑफ बर्थ डालना होगा।

दर्शन करने अयोध्या गए तो घर में घुसे चोर

- पुलिस बोली, रैकी कर घर में घुसे, चांदी के आभूषण चोरी

इंदौर (नप्र)। इंदौर के अन्नपूर्णा इलाके में एक वकील के यहां चोरी हो गई। वह परिवार के साथ अयोध्या गए थे। पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू की है। पुलिस के मुताबिक सुदामा नगर निवासी एडवोकेट विकास ने बताया कि वह 1 जून को अपने घर पर ताला लगाकर दर्शन के लिये रामलाल के यहां आयोध्या गए थे। शनिवार की सुबह वापस आए तो उनहें ताले टूटे हुए मिले। घर का काम करने वाली सुमन से पूछा तो उसने बताया कि गुरुवार को वह घर के पास काम करने आई थी तब ताले लगे थे। पुलिस के मुताबिक रैकी कर बदमाशों ने चोरी की है। वकील के मुताबिक चोरों ने घर से चांदी की पायल पांच जोड़, चांदी की गणेशजी की मूर्ति, चांदी के 10 सिक्के, चांदी की बिछिया, अन्य आभूषण और 5 हजार रुपए चुराए। पुलिस अब सीसीटीवी से आरोपियों की तलाश कर रही है।

ड्राइवर खाना खाने गया, परचून से लदा ट्रक ले गए चोर

जूनी इंदौर के लोहामंडी में परचून से भरा ट्रक चोरी हो गया। दिन में ड्राइवर खाना खाने गया था। करीब आधे घंटे में वापस आया ट्रक नहीं मिला। ट्रांसपोर्ट मालिक ने इस मामले में केस दर्ज कराया है। पुलिस के मुताबिक करणजोत सिंह बैस निवासी शिवधाम कॉलोनी लिंबोदी ने बताया कि उनका लोहामंडी में प्रवीण लॉजिस्टिक प्राइवेट लिमिटेड के नाम से फर्म है। उनके मैनेजर राजेन्द्र ने उन्हें ट्रक चोरी की जानकारी दी थी। उन्होंने बताया कि ड्राइवर योगेश कुमार ठाकरे ने बताया कि मंडी गेट पर उसने ट्रक खड़ा किया। दोपहर में 2 बजे खाना खाने गए थे। करीब आधे घंटे बाद आए तो ट्रक जगह पर नहीं था। पुलिस आसपास के फुटेज के आधार पर जांच ट्रक की तलाश कर रही है। उसमें करीब 30 से 40 लाख का माल बताया जा रहा है।

इंदौर में तापमान में आई गिरावट

सुबह छाए बादल; आज तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की बारिश के आसार

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पिछले 24 घंटों में दिन के तापमान में तेजी से गिरावट आई है। इससे मौसम में ठण्डापन है लेकिन फिर उमस महसूस हो रही है। रविवार सुबह बादल छाए और मौसम ठण्डा ही है। मौसम वैज्ञानिकों ने आज दोपहर बाद तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की बारिश के आसार जताए हैं। दिन का तापमान 40.5 (+1) डिग्री और रात का तापमान 22.6 (-3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया था। शनिवार को दिन में बादल छाए और मौसम काफी ठण्डा रहा। इस दौरान पारा 8 डिग्री लुढ़ककर 32.8 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। शनिवार रात को तापमान में 3 डिग्री का इजाफा हुआ। इस दौरान तापमान 25.2 (0) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इस दौरान रात को फिर गर्मी महसूस हुई। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा के मुताबिक साइक्लोनिक सर्कुलेशन और वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के कारण शनिवार को पूर्वी हिस्सों में बादल छाए और कई क्षेत्रों में बारिश भी हुई। रविवार को इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में बादल छाने के साथ हल्की बारिश भी हुई।

इंदौर की बेटी बनी मिस एमपी

बोली-बचपन से की मॉडलिंग, मां का सपना पूरा करने के लिए मिस इंडिया बनना चाहती हैं

इंदौर (नप्र)। इंदौर की बेटी 22 वर्षीय खुशी जायसवाल मिस एमपी बनी है। अब वो मिस इंडिया कॉम्पिटिशन में हिस्सा लेंगी। मॉडलिंग करने वाली खुशी ने बताया कि मिस एमपी बनने का रास्ता कितना चैलेंजिंग रहा। कैसे मॉडलिंग की फील्ड को चुना। घर वालों की क्या इच्छा थी। जानिए सबकुछ उन्हीं की जुबानी।

हाइट कम होने से इंदौर से रिजेक्ट हुई 20 लड़कियां

26 मई को भोपाल में बियांड इन्फिनिटी टैलेंट अकादमी द्वारा इंफिनिटी-2024 में मिस एंड मिस्टर एमपी पेजेंट का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के 20 से ज्यादा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसके ऑडिशन फरवरी 2024 में हुए थे, जिसमें पहले 60 फिर 40 और आखिर में 20 लड़कियां सिलेक्ट हुई। इंदौर से ही कई लड़कियों को रिजेक्ट कर दिया गया। इसके पीछे वजह उनकी कम हाइट होना था। नियम के तहत कम से कम 5 फिट 7 इंच हाइट होना जरूरी है। खुशी ने कहा, मेरी 5 फिट 8 इंच है। रैम्प वॉक, क्त एंड॰ राउंड, इंट्रोडक्शन और जनरल नॉलेज के अलग-अलग राउंड हुए थे। अब मुंबई में होने वाली मिस इंडिया कॉम्पिटिशन में हिस्सा लेना है। यहां विनर रही तो मिस वर्ल्ड के लिए इंडिया को रिप्रजेंट करूंगी।

पूछा गया था-सुपर पावर मिले तो क्या करोगी: मिस एमपी के लिए क्यू एंड ए राउंड में मुझ से पूछा था कि अगर सुपर पावर मिलते हैं तो क्या करोगी। मैंने क्राइम रोकने खासकर महिलाओं के साथ होने वाली ज्यादती और करप्शन को खत्म करने की बात कही। 6 साल की उम्र से मॉडलिंग कर रही खुशी अब मिस इंडिया पेजेंट में हिस्सा लेंगी।

मां बनना चाहती थी मिस इंडिया

मां भारती जायसवाल बिजनेस वुमेन है। पिता अजय जायसवाल भी बिजनेस करते हैं। एक छोटी बहन है जो क्लास 9 में पढ़ती है। मां की इच्छा मिस इंडिया बनने की थी लेकिन पारिवारिक माहौल के कारण मॉडलिंग करने की परमिशन नहीं मिली। मैं जब 6-7 साल की थी जब गणेश उत्सव में मैं पहली बार कॉम्पीटिशन में मॉडल बनी थी। बाद में मेरा भी इंटरेस्ट इस फील्ड की तरफ हुआ। मां का सपना था तो उन्होंने भी मुझे सपोर्ट किया। लॉरेंस इंटरनेशल से 12वीं करने के बाद प्रेस्टीज कॉलेज से बीबीए किया। इस दौरान मॉडलिंग, एंकरिंग जारी रही।

इंदौर में मॉडलिंग का कम स्कोप

इंदौर में मॉडलिंग नहीं है। स्कोप बहुत कम है। मैं इंदौर में मॉडलिंग लाना चाहती हूं। मुंबई में मॉडलिंग की दुनिया कई गुना फास्ट है। जो लड़कियां मॉडलिंग के क्षेत्र में आना चाहती है वो अपनी पर्सनैलिटी, हाइट और लुक्स पर ध्यान है। रैंप वॉक की प्रैक्टिस करें और डाइट का ध्यान रखे।

ट्रेन में मिले युवती के शव के टुकड़े

ट्रॉली बैग में धड़, दूसरे थैले में हाथ-कमर के नीचे का हिस्सा था

इंदौर (नप्र)। इंदौर रेलवे स्टेशन के यार्ड में युवती का शव मिला है। शव तीन हिस्सों में है। कमर के नीचे का हिस्सा और हाथ धड़ से कटे मिले हैं। पुलिस ने शव बरामद कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। टीआई संजय शुक्ला के मुताबिक शनिवार रात 12 बजे ट्रेन की सफाई के दौरान सफाईकर्मी इंजन के पीछे दूसरे नंबर के कोच में पहुंचा। यहां सफाई करने के दौरान झाड़ू बर्थ के नीचे अटक गई। सफाईकर्मी को लगा कोई सामान भूल गया। उसने झांककर देखा तो नीचे बैग और एक थैला था। ट्रॉली बैग में लॉक नहीं था, उसे जब खोला तो उसमें युवती का धड़ था। उसके हाथ नहीं थे। सफाईकर्मी ने तत्काल जीआरपी को सूचना दी। पुलिस के आने पर थैला खोला तो उसमें कमर के नीचे का हिस्सा और कटे हुए हाथ रखे मिले थे। रविवार सुबह शव का एमवाय अस्पताल में पोस्टमॉर्टम किया गया है। जिस ट्रेन में शव मिला वह ट्रेन रात 8 बजे महू से चलती है। सुबह 8 बजे नागदा जाती है। इससे पहले यार्ड में आकर खड़ी होती है।

विजयवर्गीय बोले;

पूर्व पीएम अटलजी ने चलाई सफल गठबंधन सरकार

- मोदी तीसरी पारी भी सफलतापूर्वक खेलेंगे, अभी संख्या कम लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता

इंदौर (नप्र)। मंत्री कैलाश विजयर्वीय ने गठबंधन सरकार को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने गठबंधन की सफल सरकार चलाने का श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को दिया है। साथ ही कहा कि उन्होंने (नरेंद्र मोदी) ने कुल मिलाकर 2 पारी खेली। तीसरी पारी भी सफलतापूर्वक खेलेंगे। विजयवर्गीय ने यह बयान इंदौर के रेसीडेंसी में मीडिया को दिया। उन्होंने कहा कि वाजपेयी की सफल गठबंधन सरकार के बाद जनता ने जो मैंडेट दिया उसमें भारतीय जनता पार्टी बहुमत था। गठबंधन की सरकार तो थी पर उसमें भाजपा का स्पष्ट बहुमत था। अभी जो सरकार बनी है वह गठबंधन की सरकार है। पहले भी एनडीए की सरकार थी और अभी भी एनडीए की सरकार है लेकिन भाजपा की संख्या कम है। इससे फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने मोदी को लेकर कहा कि जैसे दो पारी उन्होंने खेली, तीसरी बार भी खेलेंगे। देशहित में जो काम किए हैं अब वे ज्यादा तेजी से होंगे। हमें पूरा विश्वास है।

राहुल गांधी को कहा बच्चा, लोकसभा में हंसी का माहौल रहेगा; 3 दिन पहले कहा था मेहनती

मध्यप्रदेश सरकार में नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को बच्चा कहा है। दरअसल, दिल्ली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाए जाने का प्रस्ताव रखा गया है। मीडिया ने इसे लेकर कैलाश विजयवर्गीय से सवाल किया था। इस पर विजयवर्गीय ने कहा- बच्चा है.. लोगों को लोकसभा में बैठने का उत्साह रहेगा कि पता नहीं कब क्या बोलेंगे? कब हंसी का माहौल रहेगा। बता दें कि विजयवर्गीय शनिवार को इंदौर में रेसीडेंसी में एक मीटिंग के बाद मीडिया से चर्चा कर रहे थे।

हाल ही में राहुल गांधी की तारीफ कर चुके विजयवर्गीय

तीन दिन पहले कैलाश विजयवर्गीय का एक वीडियो सामने आया था। जिसमें वे राहुल गांधी की तारीफ करते नजर आए थे। वीडियो में उन्होंने कहा- जनता का जो जनादेश हो उसे स्वीकार करना चाहिए। राहुल जी ने भी कितनी मेहनत की है। पैदल चले बेचारे। गांव-गांव दौड़ लगाई।

लव मेरिज के दो माह बाद...दहेज के लिए प्रताड़ित किया

- अनाथ बताकर अपशब्द कहे, मारपीट की, पति ने घर से निकाला, केस दर्ज

इंदौर (नप्र)। इंदौर के भंवरकुआ और राजेन्द्र नगर में पुलिस ने दो अलग-अलग दहेज के मामले में केस दर्ज किया है। भंवरकुआ में रहने वाली पीड़िता के मुताबिक लव मैरिज के दो माह बाद ही उसे प्रताड़ना मिलने लगी। अनाथ होने के नाम पर सास ने ताने मारे। सूरज से पति ने बेटी होने पर बेटी के साथ अपनी पत्नी को मायके इंदौर भेज दिया। काफी परेशान होने के बाद पीड़िता पुलिस की शरण में पहुंची है। भंवरकुआ पुलिस के मुताबिक मुस्कान अग्रवाल ने अपने पति निलेश दम्मानी निवासी बी हाईवे टावर नवलखा और सास उषा के खिलाफ दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज कराया है। मुस्कान ने पुलिस को बताया कि 14 दिसंबर 2022 को उसने निलेश से प्रेम विवाह किया। इसके लिए परिवार से अनुमति ली गई थी। 2018 में एक दुर्घटना में माता-पिता की मौत हो चुकी थी तो शादी बुआ ने कराई। दहेज संबंधी पूरा सामान सास के कहे अनुसार दिया। लेकिन शादी के 2 माह बाद ही सास ने ताने मारे कि दहेज में कुछ नहीं लाई। जो दिया वह इतना खास नहीं था। इसके साथ ही अनाथ कहते हुए अपशब्द कहे। मारपीट भी की। पति ने सास के कहने पर घर से धक्के देकर बाहर कर दिया। इस मामले में शिकायत के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर लिया।

बेटी होने पर घर से निकाल दिया, अब 4 लाख की मांग

राजेन्द्र नगर पुलिस से ज्योति श्रीमाली ने दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज कराया है। ज्योति ने बताया कि रविप्रकाश माली निवासी सूरत गुजरात से उसकी शादी अगस्त 2020 में हुई। शादी के दो साल बाद एक बेटी हुई। बेटी होने के बाद पति का व्यवहार बदल गया। वह बेटी होने की बात पर तानाकशी करने लगे। इस दौरान उन्होंने हाथ भी उठा दिया। अगस्त 2023 में परेशान होकर इंदौर आ गई। पति ने कहा कि अगर मेरे साथ रहना है तो 4 लाख रूपए लेकर आओ। इसके बाद परिवार के लोगों ने समझाया। लेकिन पति नहीं माने। बाद में परेशान होकर थाने में शिकायत की।

एम्बुलेंस ने बाइक को टक्कर मारी

एक की मौत, एक गंभीर घायल, होटल से खाना खाकर घर लौट रहे थे बाइक सवार

शाजापुर (नप्र)। आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे पर शाजापुर बाइपास पर शनिवार देर रात दो युवक बाइक से होकर होटल से खाना खाकर लौट रहे थे। इसी दौरान 108 एम्बुलेंस ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर से एक युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई और दूसरे को गंभीर अवस्था में निजी अस्पताल में ले जाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद इन्दौर रेफर किया गया। शाजापुर के गोहिल हॉस्पिटल के कर्मचारी जितेंद्र और भूपेंद्र सिंह राजपूत बाइक से रात में तीन बजे के लगभग होटल से खाना खाकर वापस लौट रहे थे। इसी बीच बरवाल जोड़ के पास 108 ने पीछे से टक्कर मार दी। जितेन्द्र की घटना स्थल पर ही मौत हो गई, वहीं भुपेंद्र को गंभीर अवस्था में निजी अस्पताल में ले जाया गया। जहां से उसे इंदौर रेफर कर दिया है। उसकी हालत भी गंभीर बताई जा रही है। कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज कर एम्बुलेंस जब्त कर ली है।

जल गंगा संवर्धन और वंदे जलम अभियान में मैराथन

बड़ी संख्या में पहुंचे प्रतिभागी; मेयर ने दिलाई जल संरक्षण की शपथ

इंदौर (नप्र)। रविवार को नेहरू स्टेडियम में मेयर पुष्यमित्र भार्गव द्वारा 'जल गंगा संवर्धन और वंदे जलम' अभियान के तहत 10, 5 और 3 किलोमीटर की 'जय महेश मैराथन' का शुभारंभ किया गया। मेयर ने उपस्थित सभी नागरिकों को जल संग्रहण की शपथ दिलाई गई। मेयर ने कहा, प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आह्वान पर प्रदेश में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत 5 जून से 15 जून तक विभिन्न आयोजन आयोजित किया जा रहे हैं। इसमे वर्षा जल संग्रहण के साथ ही प्राकृतिक जल स्रोतों के संरक्षण के लिए भी काम किया जा रहा है।उन्होंने कहा कि वर्तमान जल संकट को देखते हुए हमें वर्षा जल संग्रहण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। जल का सही और प्रभावी उपयोग करना आज के समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। उन्होंने वर्षा जल को संग्रहित करने के विभिन्न तरीकों के बारे में भी जानकारी दी। इसमें रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, सतही जल संचयन, सड़क किनारे जल संग्रहण, पारंपरिक जल संग्रहण आदि के बारे में बताया गया।

रालामंडल में रेव पार्टी, नशे में मिली लड़कियां

नशा मिला पर मामूली कार्रवाई; फार्म हाउस पर पहुंचे एसीपी

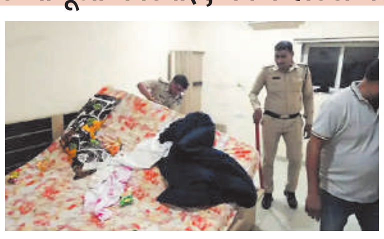

इंदौर (नप्र)। इंदौर के रालामंडल इलाके में शनिवार देर रात एक रेव पार्टी चल रही थी। सूचना मिलते ही आजाद नगर एसीपी आशीष पटले अपनी टीम के साथ पहुंचे और दबिश दी। यहां सौ से ज्यादा लड़के-लड़कियां नशा कर रहे थे। मौके से नशे की सामग्री भी जब्त की गई है। जिसे लेकर अफसरों ने बड़ी मुहिम छेड़ रखी है। सूत्रों का दावा है कि देर रात राजनीतिक दबाव के कारण कुछ युवक-युवतियों को बिना कार्रवाई के छोड़ दिया। इस मामले में धर्मेन्द्र पुत्र जुगलकिशोर निवासी महालक्ष्मी नगर और हर्ष पुत्र हेमंत सुगंधी निवासी श्रीराम इनक्लेव निवासी नानाखेड़ा पर शराब एक्ट को लेकर कार्रवाई की गई।

कई को दबाव में छोड़ना पड़ा

जानकारी के मुताबिक एसपी आशीष पटेल के पास रात में ही कई राजनीतिक से जुड़े लोगों के कॉल आने लगे। इसके चलते रात में युवक युवतियों को बिना कार्रवाई के छोड़ दिया गया। इतनी बड़ी संख्या में इकट्?ठा होकर रेव पार्टी की जानकारी पुलिस को भी नहीं लगी।

इंदौर में 14 साल की छात्रा से रेप

इंदौर (नप्र)। इंदौर के बाणगंगा में एक नाबालिग छात्रा से रेप करने के मामला सामने आया है। आरोपी ने छात्रा को रास्ते में रोककर खाली पड़ी इमारत में रेप किया। इसके बाद संबंध बनाने के लिये लगातार ब्लैकमेल करने लगा। छात्रा ने यह बात पहले परिवार को बताई। पुलिस के मुताबिक मामला एक सप्ताह पहले का है, लेकिन छात्रा ने शनिवार को इस मामले में केस दर्ज कराया। बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक 14 साल की छात्रा अपने माता-पिता के साथ थाने पहुंची थी। उसकी शिकायत पर परिचित विशाल पर केस दर्ज किया गया है। छात्रा ने बताया कि वह बहनों में सबसे छोटी है। कक्षा 8वीं की पढ़ाई कर रही है। उसने पुलिस को बताया कि दो माह पहले पिता के दोस्त का रिश्तेदार विशाल उनके घर पर आया। यहां उसका छात्रा से परिचय हो गया।

संपादकीय

जनता से किए गए वादों को पूरा करने की चुनौती

तमाम कयासों पर पानी फेरते हुए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सांसदों ने सर्वसम्मति से नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री चुन लिया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में दूसरी बार होगा, जब किसी नेता को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई। निस्संदेह यह प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तित्व का प्रभाव और उनके कामकाज के तरीके पर भरोसे का ही नतीजा है। इस बार बेशक भाजपा को अकेले दम पर पूर्ण बहुमत नहीं मिल पाया, मगर राजग को बहुमत से कुछ अधिक सीटें मिली हैं, इसलिए गठबंधन की सरकार बनने में कोई अड़चन नहीं थी। यह गठबंधन चुनाव पूर्व का है, इसलिए इसके सभी घटक दल पहले से ऐसी स्थिति में समर्थन देने को प्रतिबद्ध थे। मगर चूंकि चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार के साथ गठबंधन के पहले के अनुभवों को देखते हुए कयासों को बल मिला था कि वे सरकार बनाते समय अपनी कड़ी शर्तें रख सकते हैं और उनके पूरा न होने पर छिटक भी सकते हैं। मगर अच्छी बात है कि दोनों नेताओं ने अपनी उस पुरानी छवि को इस अवसर पर दुरुस्त करके दिखाया। हालांकि अब भी विपक्षी गठबंधन को लगता है कि गठबंधन की यह सरकार लंबे समय तक चल नहीं पाएगी, मगर फिलहाल तो इसे एक खामखयाली ही माना जाना चाहिए।इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि तीसरी बार जिम्मेदारी मिलने के बाद प्रधानमंत्री के कामकाज के तरीके में कुछ बदलाव देखा जा सकेगा। केवल इसलिए नहीं कि उन पर लगातार गठबंधन का दबाव बना रहेगा, बल्कि इसलिए भी कि इस लोकसभा का चुनाव भाजपा उनके नाम पर लड़ी थी। प्रधानमंत्री ने खुद अपने नाम से बहुत सारे कामों की गारंटी दी है। उन गारंटियों को पूरा करने का दायित्व उन पर ही है। उन्हें पूरा करने के लिए नए ढंग से रणनीति बनानी होगी। उसमें स्वाभाविक ही सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने की जरूरत पड़ेगी। घटक दलों ने सत्ता की बागडोर उनके हाथ में सौंपी है, तो जाहिर है कि उनकी मांगें मान ली गई हैं। विभागों आदि के बंटवारे पर सहमति बन चुकी है। इसलिए जो विभाग भाजपा से इतर दलों को मिलेंगे, वे प्रधानमंत्री की नीतियों और योजनाओं को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे। कोई भी सरकार तकरार से चल नहीं सकती और न उससे किसी दल को लाभ मिलता है। इसलिए घटक दलों को यह बात अच्छी तरह पता है कि सरकार की उपलब्धियों पर ही उनकी भी सफलता और विफलता निर्भर करती है। यह जरूर है कि पिछली दो सरकारों के समय जिस तरह प्रधानमंत्री और उनके मंत्री फैसले करते, नीतियों का निर्धारण करते रहे हैं, अनेक मौकों पर विधेयकों को बिना उचित बहस के पारित करा लिया गया, अब वैसा संभव नहीं होगा। इसलिए कि सदन में एक मजबूत विपक्ष भी मौजूद रहेगा और उसकी बातों की अनदेखी करना संभव नहीं होगा। इस लिहाज से भी प्रधानमंत्री के पास एक अच्छा अवसर होगा कि वे लोकतांत्रिक ढंग से मुद्दों पर निर्णय कर सकेंगे। ऐसे निर्णयों में स्थायीत्व होगा और किसी प्रकार के विवाद की गुंजाइश कम होगी। जाहिर है, इससे लोगों तक अधिक व्यावहारिक नीतियां और योजनाएं पहुंच सकेंगी। अभी तक कुछ फैसलों पर इसीलिए अंगुलियां उठती रही हैं कि वे एकतरफा और बिना उचित विचार-विमर्श के किए गए थे। उनमें से कुछ फैसलों पर घटक दलों ने सरकार बनने से पहले ही पुनर्विचार की जरूरत भी रेखांकित कर दी है।

सोशल मीडिया से...

जल संवर्धन अभियान के तहत भी सरकार तेजी से कम कर रही है। प्रदेश में 16 जून गंगा दशहरा तक एक अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत प्रदेश में साढ़े 5 करोड़ पौधे रोपे जाएंगे। नदी, बावड़ी और कुओं के संवर्धन और निर्माण की दिशा में काम किया जाएगा।

डॉ. मोहन यादव, सीएम मप्र

%भ्रष्टाचार के आरोप में केजरीवाल समेत बड़े नेताओं के जेल में होने और स्वाति मालीवाल से मारपीट की वजह से कांग्रेस पार्टी को गठबंधन से नुकसान हुआ। उन्होंने कहा कि पंजाब में हमने आप के साथ गठबंधन नहीं किया, इसका हमें सीधा फायदा हुआ है।

अलका लांबा,
कांग्रेस महिला मोर्चा अध्यक्ष

आईएनडीआईए ब्लॉक कभी भी सरकार बना सकती है। उन्होंने कहा, ऐसा मत सोचिए कि हमने अभी तक सरकार बनाने का दावा पेश नहीं किया है तो कभी नहीं करेगा। हम बस इंतजार कर रहे हैं क्योंकि चीजें बदलती हैं। आखिरकार सरकार आईएनडीआईए की ही बनेगी, एनडीए को कुछ दिन सरकार चला लेने दीजिए। कौन जानता है कि ये सरकार 15 दिन चले।

ममता बनर्जी, सीएम पश्चिम बंगाल

पीडीए की रणनीति की जीत होने से देश में नकारात्मक राजनीति खत्म हो गई है। अब समाजवादियों की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। वह जनता की एक एक बात सुनें, उनके मुद्दों को उठाएं, क्योंकि जनता के मुद्दों की जीत हुई है।

अखिलेश यादव, सपा प्रमुख

आज का कार्टून

बीजेपी के लिए कुछ नयी उम्मीदें भी हैं...

> चूंकि बीजेपी पिछले दो कार्यकाल की तुलना में राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर हुई है, इसलिए उसके लिए कुछ संभावनाएं जरूर बनती हैं। इन संभावनाओं की सबसे ज्यादा गुंजाइश महाराष्ट्र में बनती है। पहली संभावना यह नजर आती है कि महाराष्ट्र की एकनाथ शिंदे वाली शिवसेना का बीजेपी में विलय हो जाए। इसकी कोशिश शिंदे या बीजेपी, किसी भी ओर से हो सकती है। ऐसा होने से शिंदे की ताकत भी बढ़ सकती है और बीजेपी की भी। महाराष्ट्र में इसी साल के आखिर में विधानसभा का भी चुनाव होना है। अगर बीजेपी को सत्ता की केंद्रीय धुरी बने रहना है तो उसे अपनी ताकत बढ़ानी होगी। इसके लिए सबसे सहज और संभाव्य विकल्प यही लगता है कि शिंदे की पार्टी का बीजेपी में विलय हो जाए। चूंकि उद्धव ठाकरे वाली शिवसेना के लिए केंद्रीय सत्ता पांच साल दूर है, इसलिए उनके लिए इतने दिन सत्ता से दूर रहना आसान नहीं होगा। भारतीय जनता पार्टी की स्वाभाविक सहयोगी शिवसेना रही है।

उमेश चतुर्वेदी

इसे विडंबना कहें या कुछ और, संसद का नया भवन बनवाने वाले प्रधानमंत्री की अगुआई में जब अठारहवीं लोकसभा बैठेगी तो उसके साथियों की संख्या घट चुकी होगी। मोदी समर्थकों और बीजेपी के प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं के लिए यह नजारा कष्टदायक होगा। किंचित वे निराश भी होंगे, यह बात और है कि लोकसभा में उनका सबसे बड़ा दल होगा, इसलिए वे अपनी निराशा को झटककर आगे निकलने की कोशिश करेंगे।

भारतीय जनता पार्टी का शीर्ष नेतृत्व अपने कमजोर प्रदर्शन की मीमांसा जरूर करेगा, कमजोर कड़ियों को दुरूस्त करने की कोशिश भी करेगा। दस साल पहले मोदी की अगुआई वाली सरकार का आधार भले ही बीजेपी को मिला बहुमत था, फिर भी वह गठबंधन की सरकार थी। सरकार में शिवसेना, जनता दल यूनाइटेड, शिरोमणि अकाली दल शामिल थे।

चूंकि बीजेपी का बहुमत था, इसलिए वह अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने से पीछे नहीं हटती थी। लेकिन अब उसके लिए ऐसा कर पाना आसान नहीं होगा। सत्ता के इस तनाव से बचने के लिए वह सोच भी रही होगी। फिर भी कुछ संभावनाएं हैं, जिनके घटित होने की उम्मीद की जा सकती है।

राजनीति में किसी भी दल की भूमिका और प्रदर्शन का पूर्ण विराम नहीं होता। अगर ऐसा होता तो 1984 में दो सीटों पर सिमटने वाली बीजेपी देश की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में शासन का तीसरा कार्यकाल हासिल नहीं कर पाती। 2014 में महज 44 सीटों पर सिमटने वाली कांग्रेस 99 की संख्या नहीं हासिल कर पाती। इसीलिए राजनीति को संभावनाओं और आशंकाओं का खेल कहा जाता है।

चूंकि बीजेपी पिछले दो कार्यकाल की तुलना में राष्ट्रीय स्तर पर कमजोर हुई है, इसलिए उसके लिए कुछ संभावनाएं जरूर बनती हैं। इन संभावनाओं की सबसे ज्यादा गुंजाइश महाराष्ट्र में बनती है। पहली संभावना यह नजर आती है कि महाराष्ट्र की एकनाथ शिंदे वाली शिवसेना का बीजेपी में विलय हो जाए। इसकी कोशिश शिंदे या बीजेपी, किसी भी ओर से हो सकती है। ऐसा होने से शिंदे की ताकत भी बढ़ सकती है और बीजेपी की भी। महाराष्ट्र में इसी साल के आखिर में विधानसभा का भी चुनाव होना है। अगर बीजेपी को सत्ता की केंद्रीय धुरी बने रहना है तो उसे अपनी ताकत बढ़ानी होगी। इसके लिए सबसे सहज और संभाव्य विकल्प यही लगता है कि शिंदे की पार्टी का बीजेपी में विलय हो जाए। चूंकि उद्धव ठाकरे वाली शिवसेना के लिए केंद्रीय सत्ता पांच साल दूर है, इसलिए उनके लिए इतने दिन सत्ता से दूर रहना आसान नहीं होगा। भारतीय जनता पार्टी की स्वाभाविक सहयोगी शिवसेना रही है। अगर शिंदे की शिवसेना का बीजेपी में विलय हो जाता है तो उद्धव के लिए भी बीजेपी के साथ खड़ा हो जाना आसान होगा।

महाराष्ट्र में एक और संभावना राजनीति की पारखी नजरें देख सकती हैं। मराठा क्षत्रप शरद पवार अपनी आखिरी राजनीतिक पारी खेल रहे हैं। अजित पवार अलग होकर कोई खास करामात नहीं दिखा सके हैं। वैसे कई राजनीतिक जानकार मानते हैं कि उनको साथ

लाने का ही नुकसान बीजेपी को उठाना पड़ा है।

जो बीजेपी अजीत पवार को साढ़े तीन सौ करोड़ के सिंचाई घोटाले का कर्णधार बताती रही, वही उन्हें साथ लेकर आई। इससे बीजेपी का प्रतिबद्ध कार्यकर्ता पसोपेश में पड़ गया तो आम मतदाता भी चिढ़ गया। शरद पवार उन्हें सबक सिखाने की भी सोचेंगे। फिर शरद पवार की ख्याति सत्ता से दूर न रहने वाले नेता की है। दस साल से वे सत्ता से दूर हैं। जीवन के आखिरी दौर में और पांच साल सत्ता से दूर रहना आसान नहीं होगा। इसलिए शरद पवार किसी बहाने से बीजेपी की अगुआई वाली एनडीए की सत्ता को समर्थन देने के लिए आगे आ सकते हैं।

बीजेपी इन संभावनाओं पर काम करती है तो पार्टी को सीधे शिंदे की शिवसेना की सात सीटों का साथ मिल जाएगा। फिर शिवसेना उद्धव ठाकरे और एनसीपी मिलाकर सोलह सीटों का बाहरी समर्थन मिल जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो तय है कि बीजेपी की जेडीयू और चंद्रबाबू नायडू पर निर्भरता कम होगी।

साल 1998 और 1999 की अटल सरकार को चंद्रबाबू नायडू का बाहर से समर्थन था। इस समर्थन की कीमत नायडू अपने ढंग से अटल सरकार से वसूलते रहे। तब मुफ्त राशन की बजाय कोटे के राशन का जमाना था। नायडू हमेशा आंध्र के लिए ज्यादा वसूल लेते थे। वाजपेयी सरकार से तमाम योजनाएं आंध्र प्रदेश के नाम कर लेते थे। हैदराबाद और सिकंदराबाद को साइबराबाद बनाने की दिशा में उन्होंने कई योजनाएं चलाई थीं। जिनके लिए अटल सरकार पर समर्थन के एवज में दबाव बनाकर नायडू धन हासिल कर लेते थे।

इसलिए यह मानने का कोई आधार नहीं है कि लंबे समय बाद आंध्र की सत्ता में लौटे नायडू बदल गए होंगे। हालांकि बीजेपी ने उन्हें एनडीए का संयोजक बनाने का प्रस्ताव दिया है। इसके बावजूद राजनीति में कुछ भी निश्चित तौर से नहीं कहा जा सकता। इसलिए महाराष्ट्र की संभावनाएं बीजेपी के लिए जरूरी बनती हैं।

केंद्रीय स्तर पर किंचित निराश करने वाले नतीजे के साथ ही बीजेपी के लिए उड़ीसा से उम्मीदजनक समाचार भी है। पार्टी ने राज्य की 21 लोकसभा सीटों में से 20 पर जीत हासिल की है। जबकि 1999 से सत्ता में रहे राज्य के बीजू जनता दल को एक भी सीट पर जीत नहीं मिली है। बीजू जनता दल में नवीन पटनायक के बाद कोई दूसरी पंक्ति का नेतृत्व नहीं उभर पाया है। ऐसे में बीजू जनता दल के सामने अस्तित्व का संकट है। भाजपा इस अवसर का लाभ उठा सकती है।

आमतौर पर जिसकी सत्ता होती है, निर्दलीय उसी के साथ जाते हैं। इस बार सात निर्दलीय भी जीतने में कामयाब रहे हैं। उनमें से ज्यादातर का साथ बीजेपी को ही मिलने की संभावना है। क्योंकि सत्ता की मलाई मिले ना मिले, मलाई का साथ राजनीतिक दलों और नेताओं के लिए टॉनिक का काम करता है। इस टॉनिक की चाहत में वे साथ आ सकते हैं।

2004 के आम चुनाव से पहले बीजेपी में शामिल होने वालों की होड़ लग गई थी, किसी दिन अनवारूल हक शामिल हो रहे थे तो किसी दिन नागमणि, तो किसी दिन पीसी थॉमस तो किसी दिन कोई और। लगता था, जैसे वाजपेयी की अगुआई में लहर चल रही हो और उस लहर पर सभी सवार होना चाहते हैं। कुछ इसी अंदाज में इस बार भी ऐन चुनावों के पहले बीजेपी में विपक्षी दलों के लोग शामिल हो रहे थे। लेकिन 2004 में लहर नहीं चल पाई, उससे कुछ बेहतर स्थिति इस बार है, लेकिन वैसी लहर फिर नहीं चली।

इससे साबित होता है कि ऐन चुनावों के पहले दलों में आवाजाही को मतदाता पसंद नहीं कर रहा है। ऐसे में बेहतर होगा कि आवाजाही का खेल चुनावों के ऐन पहले नहीं, बल्कि काफी पहले हो तो शायद मतदाता इसे भूल जाए। वैसे भी दलबदल विरोधी कानून के चलते भी हर नेता अपनी सदस्यता का कार्यकाल पूरी कर लेना चाहता है, उसे गंवाना नहीं चाहता। बीजेपी को दो बार इसका नुकसान उठाना पड़ा है। इसलिए हो सकता है कि अब सीख लेकर ऐसे कदम उठाने के लिए वह ऐन चुनाव के पहले का वक्त ना चुने।

पढ़ने का अर्थ साक्षर होना या शिक्षित!

गौरव बिस्वा

किसी कक्षा की उपाधि या डिग्री लेना, लिपिक जैसी नौकरी करना, पैसा कमाना और सिर्फ एक प्रतियोगिता का हिस्सा बनकर रह जाना ही क्या जीवन है? यही जीवन है, ऐसी शिक्षा कहां से मिली? दरअसल, वर्तमान समय में शिक्षित होने का अर्थ है आर्थिक क्षेत्र में महारत हासिल करना। शिक्षा तंत्र पैसा कमाना मात्र सिखा रहा लगता है। पैसा कमा लेना बहुत आसान है। उससे ज्यादा मुश्किल है ज्ञान कमाना यानी पढ़कर प्रज्ञा या विद्वता का विकास करना। प्रज्ञा का अर्थ है ज्ञान को जीवन में उतारने की शक्ति। इन दोनों से ही मुश्किल काम है मनुष्यता कमाना यानी लोगों से जुड़ना और उनके सुख-दुख में काम आने का भाव रखना। कष्ट काल में हमारे पास जितने अधिक मित्र होंगे, हम उतने ही सफल और शिक्षित माने जाएंगे। समस्या यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली मनुष्य न बनाकर मानो पैसा कमाने वाले यांत्रिक मनुष्यों का निर्माण कर रही है। इस प्रणाली में सभी के पास पैसा, सुविधाएं और संसाधन तो हैं, लेकिन उनमें लोगों से जुड़ कर उन्हें खुशी देने का भाव कमतर है। शिक्षित होने का अर्थ इंसानियत का विकास है, मनुष्यता का जागरण है, समानुभूति महसूस करने का प्रक्रम है। अगर ये गुण नहीं तो कैसी शिक्षा, कैसी डिग्री और कैसी सफलता? एक चिकित्सक मरणासन्न मरीज को सामने पड़ा देखने के बावजूद अपनी फीस और खर्च पहले मांगे तो क्या वह शिक्षित है? अध्यापक बालक को पढ़ाने के बजाय उसे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न देने का कहकर पैसे मांगे तो क्या वह अध्यापक शिक्षित है? ये चिकित्सक या अध्यापक सिर्फ एक डिग्रीधारी साक्षर अनुपयोगी अमानुष हैं। पुस्तकों को रट कर उपाधियां प्राप्त कर चुके संवेदनहीन ऐसे लोगों से समाज भरा पड़ा है। क्या ऐसे लोगों को सफल माना जा सकता है? क्या रोटी कमा लेना, आलीशान मकान और गाड़ी खरीद लेना और सभी संसाधन जुटा लेना ही जीवन है? नहीं। जीवन इससे कुछ अधिक, कुछ बड़ा है। रोजाना मनुष्यों के अंग बेच देने, बेवजह शल्यक्रिया करने, अपनी जगह किसी अन्य व्यक्ति को परीक्षा में बिठाने आदि के विषय में पढ़कर पीड़ा होती है। क्या ऐसे काम करने वाले व्यक्तियों के पास उपाधियां नहीं थीं? वे उपाधिधारक थे, लेकिन मनुष्य वेश में अमानुष थे। इनके लिए पैसा ही सब कुछ था। सिर्फ पैसा बनाने लायक हो जाना ही शिक्षित होना है, तो आज कुछ तथाकथित शिक्षितों के माता-पिता वृद्धाश्रमों में क्यों होते हैं? वे वृद्धाश्रमों में इसलिए हैं कि उनकी संतानों के पास सिर्फ उपाधियां हैं, नैतिकता और संस्कार नहीं। वास्तविक शिक्षा नैतिक मूल्य देती है और इससे विहीन शिक्षा विकृत मानसिकता वाले लोगों को जन्म देती है। आंकड़ों के अनुसार, तथाकथित शिक्षित समाज में सर्वाधिक तलाक होते हैं अहंकार के चलते। तुच्छ बातों के कारण तलाक होना, तलाक दर का निरंतर बढ़ना क्या दर्शाता है? शिक्षा यह सिखा न सकी कि शिक्षित होने का दूसरा अर्थ है अहंकार का दमन। 'इदं न मम' के भाव का विकास शिक्षा है, जिसके अनुसार जो है वह दूसरों का है, मेरा नहीं।पैसा कमाना द्वितीयक है। प्रारंभिक कार्य है मनुष्य में जीवन मूल्यों का संचार। इसी पल विचार करके देखा जा सकता है कि हमारा दस वर्षीय पुत्र नकल करके कक्षा में प्रथम आ जाता है। क्या हम उसकी पीठ थपथपाएंगे? नहीं। हम उसे समझाएंगे। बाद में वही पुत्र छब्बीस साल का होता है और रिश्वत देकर नौकरी लेना चाहता है। क्या हम उसे यह कहेंगे कि यह तो सेवा शुल्क है और भ्रष्टाचार ही आज का शिष्टाचार है? हम ऐसा नहीं कहेंगे। इसकी वजह है नैतिक मूल्य। शिक्षा नैतिक आचरण, समाज में योगदान देने की सीख देती है, सिर्फ पैसा कमाना नहीं सिखाती।पशुओं के पास अपनी प्रकृति का निवास होता है, सुविधाएं होती हैं, भोजन होता है और सुंदरता भी। इन सबके बावजूद उनमें मनुष्य की तरह की संवेदना नहीं दिखती। मनुष्य में संवेदना और दूसरों के प्रति करुणा जगाने का काम करती है शिक्षा। अगर प्रेम, मनुष्यता और संवेदना नहीं है तो मनुष्य सिर्फ डिग्रीधारी निस्पंद संवेदनहीन मूरत है, शिक्षित नहीं।

आपकी शिकायत/समस्याओं में
आपका साथी
दैनिक सद्भावना पाती

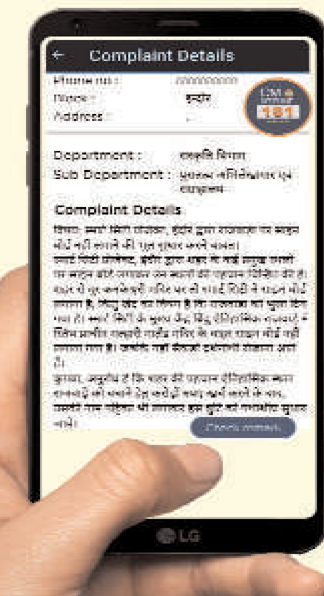

शिकायत / पत्र संपादक के नाम
आप किसी समस्या, शिकायत, मुद्दे, जानकारी, गड़बड़ी, भ्रष्टाचार, नियम विरुद्ध काम आदि की शिकायत संपादक के नाम व्हाट्सएप पर भेज सकते हैं।
सर्वप्रथम आप अपने मोबाइल में सीएम हेल्पलाइन 181 एप डाउनलोड करें
और उस पर शिकायत उपरांत हमें उसका स्क्रीन शॉट और फोटो भेजें।
हम उस शिकायत को दैनिक सद्भावना पाती में प्रकाशित करेंगे और आपकी समस्या/शिकायत को शीघ्र खत्म करने का प्रयास करेंगे।
केवल व्हाट्सएप करें, कॉल न करें।
व्हाट्स ऐप न. 9685611304
ईमेल आईडी- reporter.spnews@gmail.com
नोट :- जनहित की समस्याओं पर उचित ईनाम भी दिया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

तिरुपुर कपड़ा उद्योग का संकट, नहीं लौट रहे वोट देने गए मजदूर

नई दिल्ली, एजेंसी। अपने कपड़ा उद्योग के लिए फेमस तमिलनाडु का तिरुपुर इन दिनों संकटों से जूझ रहा है। यह संकट पैदा हुआ है हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव के कारण। खबरों की मानें तो तिरुपुर कपड़ा उद्योग अभी श्रमिकों की कमी की समस्या का सामना कर रहा है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, तिरुपुर के कपड़ा उद्योग में काम करने वाले ज्यादातर कामगार हालिया चुनावों में वोट डालने के लिए अपन गांव गए। उसके बाद समस्या ये आई है कि वोट डालने अपने गांव गए मजदूर अब वापस नहीं लौट रहे हैं। इससे उद्योग जगत की परेशानियां बढ़ गई हैं। सबसे खराब बात ये है कि श्रमिकों की कमी का संकट ऐसे समय सामने आया है, जब डिमांड में सुधार के संकेत दिख रहे थे।

तिरुपुर कपड़ा उद्योग से जुड़े लोगों का कहना है कि अमेरिका में डिमांड में सुधार हो रहा है और उसके चलते निर्यात के अच्छे ऑर्डर मिलने की उम्मीद है। हालांकि अब श्रमिकों की कमी से दिक्कतें आ सकती हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, तिरुपुर के कपड़ा उद्योग में काम करने वाले ज्यादातर मजदूर उत्तर प्रदेश, बिहार, असम और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों के हैं। छोटे-बड़े कपड़ा मिलों में एक लाख से डेढ़ लाख लोग काम करते हैं। वे मजबूर लोकसभा चुनाव के दौरान वोट देने के लिए गए लेकिन अब लौटकर नहीं आना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि उनकी स्थानीय सरकारें विकास कार्य तेज करेंगी, जिससे उन्हें काम के लिए कहीं और जाने की जरूरत नहीं होगी।

चालू वित्त वर्ष में 7 प्रतिशत गिर सकती है वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री: इक्रा

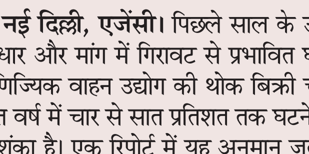

नई दिल्ली, एजेंसी। पिछले साल के उच्च आधार और मांग में गिरावट से प्रभावित घरेलू वाणिज्यिक वाहन उद्योग की थोक बिक्री चालू वित्त वर्ष में चार से सात प्रतिशत तक घटने की आशंका है। एक रिपोर्ट में यह अनुमान जताया गया है। रेटिंग एजेंसी इक्रा ने शुक्रवार को जारी रिपोर्ट में कहा कि उच्च आधार प्रभाव और पहले कुछ महीनों में बुनियादी ढांचा गतिविधियों पर लोकसभा चुनाव प्रक्रिया के प्रभावों को देखते हुए मध्यम और भारी वाणिज्यिक वाहनों (ट्रकों) की बिक्री में सालाना आधार पर चार से सात प्रतिशत की गिरावट आ सकती है।

इक्रा ने कहा कि हल्के वाणिज्यिक वाहनों की थोक बिक्री में वित्त वर्ष 2024-25 में पांच से आठ प्रतिशत की गिरावट आने की आशंका है। उच्च आधार प्रभाव, ई-कॉमर्स गतिविधियों में सुस्ती और इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहनों से बिक्री में गिरावट से ऐसा होने का अनुमान है। रेटिंग एजेंसी ने घरेलू वाणिज्यिक वाहन उद्योग की तेजी चालू वित्त वर्ष में थम जाने की आशंका जताते हुए कहा कि इसकी थोक बिक्री में चार से सात प्रतिशत की गिरावट आएगी। इक्रा ने कहा कि पिछले वित्त वर्ष (2023-24) में थोक बिक्री में एक प्रतिशत और खुदरा बिक्री में तीन प्रतिशत की धीमी वृद्धि रही थी।

इक्रा रेटिंग्स की वरिष्ठ उपाध्यक्ष और सह-समूह प्रमुख किंजल शाह ने कहा, वित्त वर्ष 2021-22 और वित्त वर्ष 2022-23 में मात्रा के साथ टन भार के मामले में भी बहुत तेज वृद्धि देखी गई थी। वित्त वर्ष 2023-24 में घरेलू वाणिज्यिक वाहन मात्रा वृद्धि की रफ्तार सुस्त हो गई थी और आम चुनावों के कारण कुछ क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों में क्षणिक नरमी के बीच चालू वित्त वर्ष में गिरावट का अनुमान है।

इस हफ्ते बाजार में दिख सकती है स्थिरता

नई सरकार, महंगाई समेत 6 फैक्टर्स तय करेंगे बाजार की चाल

मुंबई , एजेंसी। इस हफ्ते, बाजार में थोड़ी स्थिरता देखने को मिल सकती है, क्योंकि नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण के बाद केंद्र सरकार को लेकर अब ज्यादा स्पष्टता आ जाएगी। भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने सरकार बनाई है।

पिछले हफ्ते, सरकार को लेकर अस्पष्टता के कारण बाजार में काफी उतार-चढ़ाव रहा था। एग्जिट पोल में बीजेपी को भारी बहुमत (300 से ज्यादा सीट) मिलने के अनुमान के बाद सेंसेक्स 2,507 पॉइंट चढ़कर 76,468 के स्तर पर बंद हुआ था।

हालांकि, चुनाव नतीजों वाले दिन बीजेपी की सीटें कम होने से सेंसेक्स 4389 अंक (5.74 प्रतिशत) की गिरावट के साथ 72,079 के स्तर पर बंद हुआ। अगले दिन 5 जून को सेंसेक्स 2,303 अंक, 6 जून को 692 अंक और 7 जून को 1,618 अंक की बढ़ते के साथ बंद हुआ था।

रिटेल महंगाई घट सकती है, थोक महंगाई बढ़ सकती है: 12 जून को मई महीने की महंगाई के आंकड़े जारी हो सकते हैं। अर्थशास्त्रियों को उम्मीद है कि यह अप्रैल के 4.83 प्रतिशत से घटकर 4.80 प्रतिशत पर आ जाएगी। अप्रैल में, महंगाई में गिरावट फ्यूल और लाइट की कीमतों में गिरावट से आई थी।

हालांकि, खाद्य महंगाई ऊपर की ओर बनी हुई है। अप्रैल में खाद्य महंगाई दर 8.52 प्रतिशत से बढ़कर 8.78 प्रतिशत पर पहुंच गई थी। ग्रामीण महंगाई दर 5.45 प्रतिशत से घटकर 5.43 प्रतिशत आ गई और शहरी महंगाई दर 4.14 प्रतिशत से घटकर 4.11 प्रतिशत पर आ गई थी।

उधर, 14 जून को थोक महंगाई दर भी जारी की जाएगी। यह अप्रैल के 1.26 प्रतिशत से मई में तेजी से बढ़कर 4 प्रतिशत होने की उम्मीद है। इसका मुख्य कारण फ्यूल की महंगाई हो सकती है, जिसके अप्रैल में 1.38 प्रतिशत से बढ़कर मई में 7प्रतिशत होने का अनुमान है।

आईआईपी ग्रोथ घटकर 3.9 प्रतिशत पर आ सकती है: 12 जून को ही आईआईपी के आंकड़े भी जारी होने की उम्मीद है। अप्रैल के 4.9 प्रतिशत से मई में इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन घटकर 3.9 प्रतिशत होने की उम्मीद है। मैन्युफैक्चरिंग का इंडेक्स में 78 प्रतिशत का योगदान है। मई में मैन्युफैक्चरिंग ग्रोथ घटकर 4.9 प्रतिशत पर आ सकती है, जो अप्रैल में 5.2 थी।

पैसेंजर व्हीकल सेल्स का डेटा जारी होगा: 13 जून को बाजार की नजर पैसेंजर व्हीकल सेल्स पर भी रहेगी। SIAM के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में कुल यात्री वाहन की बिक्री एक साल पहले की तुलना में 1.2 प्रतिशत बढ़कर अप्रैल 2024 में 287,746 हो गई थी। ये पिछले महीने में 8.9 प्रतिशत की ग्रोथ से कम थी।

तब बाजार पर नजर रखने वालों ने मांग में कमी से जोड़ा था। उनका कहना था कि पॉलिसी मेकिंग में निरंतरता और उम्मीद से बेहतर मॉनसून से तस्वीर बेहतर होगी। इसलिए, वे इस बात पर नजर रखेंगे कि क्या उनकी उम्मीदें पूरी हुईं।

अमेरिका ब्याज दरें और यूके जीडपी जारी करेगा: फेडरल ओपन मार्केट कमेटी की मीटिंग 11 से 12 जून के बीच होगी और यूएस फेड 13 जून को अपने नीतिगत रुख की घोषणा करेगा। मोटे तौर पर, बाजार को उम्मीद है कि केंद्रीय बैंक अपनी दरें 5.25-5.50 प्रतिशत पर रखेगा।

सप्ताह की शुरुआत में, 10 जून को, जापान अपने आर्थिक विकास के आंकड़े और इको वॉचर्स सर्वे जारी करेगा। फिर, 11 और 12 जून को, यूके जॉब रिपोर्ट, इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन और जीडीपी ग्रोथ जारी करेगा। 12 जून को चीन अपना महंगाई का डेटा जारी करेगा।

FIIs ने 16,971 करोड़ के शेयर बेचे: पिछले हफ्ते, विदेशी संस्थागत निवेशक ने 16,971 करोड़ रुपए से ज्यादा के शेयर बेचे, लेकिन उन्होंने डेट सेगमेंट में 4,669 करोड़ रुपए से अधिक की खरीदारी की। वहीं DIIs ने कैश सेगमेंट में 5,578 करोड़ रुपए से अधिक की खरीदारी की। आने वाले हफ्ते में, विदेशी निवेशक शेयरों की बिकवाली जारी रख सकते हैं।

दो मेनबोर्ड आईपीओ पर बाजार की नजर रहेगी: ले ट्रैवेन्यूज टेक्नोलॉजी का 120 करोड़ रुपए का इश्यू 10 जून को खुलेगा और 12 जून को बंद होगा। 10 जून को ही क्रोनॉक्स लैब साइंसेज की लिस्टिंग होगी। ले ट्रैवेन्यूज लोगों को उनकी यात्रा की बेहतर योजना बनाने में मदद करता है और क्रोनॉक्स एक स्पेशलिटी केमिकल मैन्युफैक्चर है। एसएमई सेगमेंट में, कंपनियों को अपने आईटी सॉल्यूशन्स को इंटीग्रेट करने में मदद करने वाली कंपनी 3सी आईटी सॉल्यूशंस, गद्दे और तकिए बेचने वाली कंपनी मजेंटा लाइफ केयर और साइबर सिक्योरिटी सॉल्यूशन वाली सैट्रिक्स इंफॉर्मेशन सिक्योरिटी की लिस्टिंग 12 जून को होगी।

7 जून को सेंसेक्स 76,795 के ऑलटाइम हाई बनाया था: रिजर्व बैंक के जीडीपी अनुमान बढ़ाने के बाद हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन यानी, 7 जून को सेंसेक्स 76,795 के ऑलटाइम हाई पर पहुंच गया था। हालांकि, बाद में ये थोड़ा नीचे आया और सेंसेक्स 1,618 अंक की बढ़त के साथ 76,693 पर बंद हुआ।

वहीं, निफ्टी में भी कारोबार के दौरान करीब 500 अंकों की बढ़त देखने को मिली और ये 23,320 के स्तर पर पहुंचा। निफ्टी 468 अंक की बढ़त के साथ 23,290 के स्तर पर बंद हुआ। ये निफ्टी का ऑलटाइम क्लोजिंग हाई है।

सेंसेक्स के सभी 30 शेयरों में तेजी रही। एम एण्ड एम का शेयर सबसे ज्यादा 5.83 प्रतिशत चढ़ा है। वहीं आईटी कंपनी विप्रो और टेक महिंद्रा में करीब 5 प्रतिशत की तेजी रही। टाटा स्टील, इंफोसिस और भारती एयरटेल के शेयर करीब 4 प्रतिशत चढ़े हैं।

पीटीसी इंडिया का मार्च तिमाही में शुद्ध लाभ 30 प्रतिशत घटा

नई दिल्ली, एजेंसी। बिजली कारोबार समाधान प्रदाता पीटीसी इंडिया का मार्च तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ लगभग 30 प्रतिशत घटकर 91.11 करोड़ रुपए रह गया। कंपनी ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध लाभ 91.11 करोड़ रुपए रहा जबकि एक साल पहले की समान तिमाही में यह 129.34 करोड़ रुपए था।

समीक्षाधीन तिमाही में उसकी कुल मात्रा 10 प्रतिशत बढ़कर 18.02 अरब यूनिट तक पहुंच गई, जो एक साल पहले की समान अवधि में 16.39 अरब यूनिट थी। वित्त वर्ष 2023-24 में उसका एकीकृत लाभ बढ़कर 533.16 करोड़ रुपए हो गया जबकि वित्त वर्ष 2022-23 में यह 507.15 करोड़ रुपए था। पीटीसी इंडिया के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक राजीव के मिश्रा ने बताया कि निदेशक मंडल ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 7.80 रुपए प्रति इक्विटी शेयर का लाभांश देने की सिफारिश की है।

चंद्रबाबू परिवार की संपत्ति 5 दिन में 35.71 प्रतिशत बढ़ी

भारत ने मई में 722 करोड़ रुपए का सोना खरीदा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई ने मई में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सोना खरीदार रहा। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के मुताबिक, बीते माह भारत ने करीब 722 करोड़ रुपए का सोना खरीदा। सिर्फ स्विटजरलैंड और चीन ने भारत से ज्यादा गोल्ड खरीदा।

बीते 5 वित्त वर्षों में भारत ने अपने गोल्ड रिजर्व में करीब 204 टन सोने की बढ़ोतरी की। मार्च 2019 में देश का गोल्ड रिजर्व 618.2 टन था, जो 31 मार्च 2024 को 33 प्रतिशत बढ़कर 822.1 टन हो गया। हालांकि, इस दौरान सोने की कीमतों में करीब 70 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

चंद्रबाबू परिवार की संपत्ति 5 दिन में 858 करोड़ बढ़ी : 35.71 प्रतिशत हिस्सेदारी वाले हेरिटेज फूड्स के शेयर 55त्न चढ़े; आंध्र-केंद्र में जीत से बढ़ा भरोसा

चंद्रबाबू नायडू परिवार की संपत्ति पिछले 5 दिनों में ही 858 करोड़ रुपए बढ़ी है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार हेरिटेज फूड्स के शेयरों में इस दौरान 55त्न का उछाल आने से ऐसा हुआ है। हेरिटेज फूड्स के प्रमोटर पार्टी प्रमुख चंद्र बाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश हैं। चंद्रबाबू नायडू 12 जून को आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे।

हेरिटेज ग्रुप की स्थापना 1992 में चंद्रबाबू नायडू ने की थी। यह कंपनी डेयरी, रिटेल और एग्री सेगमेंट में काम करती है। हाल ही में हुए आंध्र प्रदेश विधानसभा और लोकसभा चुनावों में तेलुगु देशम पार्टी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू का शानदार प्रदर्शन रहा है। इससे उनकी कंपनी पर निवेशकों का भरोसा बढ़ा है।

को-फाउंडर सचिन बंसल ने एथर एनर्जी से एग्जिट किया : सचिन ने अपनी बाकी बची हुई 7.5 प्रतिशत हिस्सेदारी हीरो और जेरोधा के निखिल कामथ को बेची

फ्लिपकार्ट के को-फाउंडर सचिन बंसल ने इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर कंपनी एथर एनर्जी में अपनी बाकी बची 7.5 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच दी है। अब उनकी एथर एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड में कोई हिस्सेदारी नहीं बची है। इकनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, बंसल ने अपनी हिस्सेदारी हीरो मोटोकॉर्प और जेरोधा के को-फाउंडर निखिल कामथ को बेची है। बंसल एथर एनर्जी के लिए शुरुआती निवेशकों में शामिल थे और 2014 से लेकर अब तक कंपनी में लगभग 400 करोड़ रुपए का निवेश कर चुके हैं। टीवीएस ने इस रिकॉल से प्रभावित स्कूटरों की सही संख्या का खुलासा नहीं किया है। हालांकि, मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि रिकॉल में लगभग 45,000 यूनिट शामिल हो सकती हैं।

आकासा एयर मुनाफे की राह पर, अधिक अंतरराष्ट्रीय उड़ानें शुरू होंगी

नयी दिल्ली, एजेंसी। आकासा एयर के सह-संस्थापक आदित्य घोष ने बताया कि एयरलाइन मुनाफे की राह पर है और वह दक्षिण एशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया सहित अधिक अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों के लिए उड़ान भरेगी। आकासा एयर के पास 24 विमानों का बेड़ा है और उसके 4,000 से अधिक कर्मचारी हैं। राष्ट्रीय राजधानी में घोष ने कहा कि भारत में एयरलाइंस उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। घोष ने अन्य भूमिकाओं के अलावा, 2018 तक दस वर्ष इंडिगो के अध्यक्ष और पूर्णकालिक निदेशक के रूप में कार्य किया है। उन्होंने कहा कि आकासा को ग्राहक केंद्रित और कर्मचारी केंद्रित संगठन बनाने के साथ ही वित्तीय रूप से टिकाऊ व्यवसाय बनाना भी महत्वपूर्ण है। घोष ने इस बात पर जोर दिया कि आकासा एयर लाभप्रदता के मार्ग पर है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि आकासा में हम लाभप्रदता के रास्ते पर हैं... हम इस पर दृढ़ता से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं... हमने बेहतर परिचालन भरोसा, सबसे कम ग्राहक शिकायतें, उच्चतम लोड कारक, सबसे कम रद्दीकरण देखा है। एयरलाइन के पास इस समय 24 छोटे आकार के बोइंग 737 मैक्स विमानों का बेड़ा है।

घोष ने कहा, हमने दोहा के लिए उड़ान भरना शुरू कर दिया है, जेद्दा के लिए उड़ानों की घोषणा की है, हम पश्चिम एशिया में और अधिक गंतव्यों पर जाने वाले हैं। हम दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में भी जाएंगे। साथ ही भारत के छोटे शहरों में भी विस्तार करेंगे, क्योंकि वहां बहुत संभावनाएं हैं। एयरलाइन 15 जुलाई से जेद्दा के लिए उड़ानें शुरू करेगी। इसके पास कुवैत और रियाद के लिए यातायात अधिकार भी हैं। यह पूछने पर कि क्या आकासा एयर अपने बेड़े में चौड़े आकार के विमान भी शामिल कर सकती है, उन्होंने कहा कि लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले व्यवसाय मॉडल एक प्रकार के बेड़े पर केंद्रित रहते हैं।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस ने सेबी के पास ड्राफ्ट-पेपर्स जमा किए

नई दिल्ली, एजेंसी। कल की बड़ी खबर बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड से जुड़ी रही। बजाज फाइनेंस की सब्सिडियरी कंपनी बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड जल्द ही इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग यानी आईपीओ लाने की तैयारी कर रही है। इस आईपीओ के जरिए कंपनी 7,000 करोड़ रुपए जुटाना चाहती है। वहीं, भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआई ने मई में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सोना खरीदार रहा। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के मुताबिक, बीते माह भारत ने करीब 722 करोड़ रुपए का सोना खरीदा। सिर्फ स्विटजरलैंड और चीन ने भारत से ज्यादा गोल्ड खरीदा। बजाज फाइनेंस की सब्सिडियरी कंपनी बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड जल्द ही इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग यानी आईपीओ लाने की तैयारी कर रही है। कंपनी ने आईपीओ लाने के लिए सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस यानी पेपर्स फाइल किए हैं। इस आईपीओ के जरिए कंपनी 7,000 करोड़ रुपए जुटाना चाहती है। इस बात की जानकारी बजाज हाउसिंग फाइनेंस ने एक्सचेंज फाइलिंग में दी है।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शरीफ, चीन के राष्ट्रपति जिनपिंग सीपीईसी के उन्नयन पर सहमत

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और चीन के राष्ट्रपति शी चिनपिंग ने अपनी बैठक में चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के उन्नयन और दूसरे चरण में कई अरब डॉलर की परियोजना के उच्च-गुणवत्तापूर्ण विकास को आगे बढ़ाने पर आम सहमति की पुष्टि की है। शरीफ की पांच दिवसीय आधिकारिक चीन यात्रा चार जून से शुरू हुई थी। इस दौरान शुक्रवार को दोनों नेताओं ने बीजिंग के ऐतिहासिक ग्रेट हॉल ऑफ द पीपुल में गहन चर्चा की। दोनों नेताओं के साथ मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी भी थे। इस साल राष्टपति पद संभालने के बाद शरीफ की राष्ट्रपति शी से यह पहली मुलाकात थी।

सरकारी मीडिया के अनुसार, दोनों नेताओं ने सीपीईसी के उन्नयन और दूसरे चरण में मेगा परियोजना के विकास को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई। सीपीईसी पाकिस्तान के बलूचिस्तान में ग्वादर बंदरगाह को चीन के झिंजियांग प्रांत से जोड़ता है। यह चीन की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) की प्रमुख परियोजना है। बीआरआई को चीन द्वारा दुनिया भर में चीनी निवेश द्वारा वित्तपोषित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के माध्यम से विदेशों में अपना प्रभाव बढ़ाने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। प्रधानमंत्री शरीफ ने 2015 में राष्ट्रपति शी जिनपिंग की ऐतिहासिक पाकिस्तान यात्रा को याद किया, जब सीपीईसी को औपचारिक रूप से चालू किया गया था।

उन्होंने सीपीईसी के उच्च गुणवत्ता वाले विकास के प्रति पाकिस्तान की प्रतिबद्धता तथा निकट समन्वय के माध्यम से दोनों देशों की विकास रणनीतियों के बीच तालमेल को बढ़ावा देने पर जोर दिया। दोनों नेताओं ने चिर-प्रतिष्ठित सर्व-मौसम रणनीतिक सहयोग साझेदारी को दोहराया और राजनीतिक एवं सुरक्षा से लेकर आर्थिक, व्यापार और लोगों के बीच आदान-प्रदान तक के विविध क्षेत्रों में सहयोग को और अधिक गहरा करने का संकल्प व्यक्त किया। उन्होंने अफगानिस्तान, फिलिस्तीन और कश्मीर सहित दक्षिण एशिया सहित क्षेत्रीय और वैश्विक घटनाक्रमों पर भी विचार साझा किए।

इक्सिगो की मूल कंपनी का आईपीओ आज से ओपन होगा, 12 जून तक बोली लगा सकेंगे

मुंबई, एजेंसी। ट्रैवल एग्रीगेटर इक्सिगो की मूल कंपनी ले ट्रैवेन्यूज टेक्नोलॉजी का इनिशियल पब्लिक ऑफर यानी आईपीओ पब्लिक सब्सक्रिप्शन के लिए कल से ओपन होगा। रिटेल निवेशक इस आईपीओ के लिए 10 जून से 12 जून तक बोली लगा सकेंगे।

इस इश्यू के जरिए कंपनी टोटल 740.10 करोड़ जुटाना चाहती है। इसके लिए कंपनी 120 करोड़ के 12,903,226 नए शेयर इश्यू करेगी। वहीं, कंपनी के मौजूदा निवेशक ऑफर फॉर सेल यानी ह्लस्नस् के जरिए 740.10 के 79,580,900 शेयर बेचेंगे।

अगर आप भी इस आईपीओ में पैसा लगाने का प्लान बना रहे हैं तो हम आपको बता रहे हैं कि आप इसमें कितना निवेश कर सकते हैं। इस आईपीओके लिए रिटेल निवेशक को मिनिमम एक लॉट यानी 161 शेयर के लिए अप्लाय करना होगा। कंपनी ने आईपीओ का प्राइज बैंड 88- 93 प्रति शेयर तय किया है। यदि आप आईपीओ के अपर प्राइज बैंड 93 के हिसाब से 1 लॉट के लिए अप्लाय करते हैं तो आपको 14,973 लगाने होंगे। रिटेल निवेशक अधिकतम 13 लॉट यानी 2093 शेयर के लिए बिडिंग कर सकते हैं, जिसके लिए 194,649 इन्वेस्ट करने होंगे।

ले ट्रैवेन्यूज टेक्नोलॉजी लिमिटेड ने इश्यू का 75 प्रतिशत हिस्सा क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स के लिए रिजर्व रखा गया है। इसके अलावा करीब 10त्न हिस्सा रिटेल इनवेस्टर्स और बाकी का 15 प्रतिशत हिस्सा नॉन-इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व है। ले ट्रैवेन्यूज़ टेक्नोलॉजी लिमिटेड की स्थापना 2006 में हुई थी। यह एक ऑनलाइन ट्रैवल एजेंसी है जो ट्रैवलर्स को इक्सिगो ऐप के जरिए ट्रेन, फ्लाइट, बस टिकट के साथ ही होटल बुक करने की सुविधा देता है।

लू के थपेड़ों से बचायें पशुओं को

मौसम के प्रभाव का पशुओं की दिनचर्या से सीधा संबंध है. मौसम की विभिन्नता, इसके बदलाव की स्थिति में पशु के लिए विशेष प्रबंध करने के प्रयासों की आवश्यकता रहती है। हमारी भौगोलिक स्थिति के अनुसार मौसम में काफी विविधताएं हैं, वहीं देश के पश्चिम भाग में गर्मी काफी तेज पड़ती है। जरा सी लापरवाही से किसानों को पशुधन की क्षति हो सकती है।

अधिक गर्म समय में पशु के शारीरिक तंत्र में व्यवधान आ जाता है, जिसके कारण गर्मी पशु के शरीर में इकट्ठा हो जाती है तथा सामान्य प्रक्रिया के माध्यम से वह बाहर नहीं निकलती है, जिसकी वजह से पशु को तेज बुखार आ जाता है और बेचैनी बढ़ जाती है. यही रोग पशु में लू लग जाना कहलाता है. यह रोग अधिक गर्म मौसम जब वातावरण में नमी और ठंडक की कमी आ जाती है तथा तेज गर्म हवाएं चलती हैं, पशु आवास में स्वच्छ वायु नहीं आने के कारण होता है। कम स्थान में अधिक पशु रखने तथा अधिक मेहनत करने से उत्पन्न होने वाली गर्मी से भी यह रोग होता है। गर्मी के मौसम में पशु को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं पिलाना मुख्य कारण माना जाता है. रेगिस्तानी क्षेत्र में तेज लू व सूखी गर्मी पड़ने के कारण वहां पशुओं की ज्यादा हानि होती है।

लू के लक्षण

पशु को लू लगने पर 106 से 108 डिग्री फेरनहाइट तेज बुखार होता है सुस्त होकर खाना-पीना छोड़ देता है, मुंह से जीभ बाहर निकलती है तथा सही तरह से सांस लेने में कठिनाई होती है तथा मुंह के आसपास झाग आ जाता है. लू लगने पर आंख व नाक लाल हो जाती है. प्राय: पशु की नाक से खून आना प्रारंभ हो जाता है जिसे हम नक्सीर आने पर पशु के ह्रदय की धड़कन तेज हो जाती है और श्वास कमजोर पड़ जाती है जिससे पशु चक्कर खाकर गिर जाता है तथा बेहोशी की हालत में ही मर जाता है.

उपचार

इस रोग से पशुओं को बचाने के लिये कुछ सावधानियां बरतनी चाहिये. पशु आवास में स्वच्छ वायु जाने एवं दूषित वायु बाहर निकलने के लिये रोशनदान होना चाहिए. तथा गर्म दिनों में पशु को दिन में नहलाना चाहिए खासतौर पर भैंसों को ठंडे पानी से नहलाना चाहिए. पशु को ठंडा पानी पर्याप्त पिलाना चाहिए। संकर नस्ल के पशु जिनको अधिक गर्मी सहन नहीं होती है उनके आवास में पंखे या कूलर लगाना चाहिए. पशुओं को इस रोग से बचाने में उसके आवास के पास लगे पेड़-पौधे बहुत सहायक होते हैं। लू लगने पर पशु के शरीर में पानी की कमी हो जाती है, इसकी पूर्ति के लिये पशु को ग्लूकोज की बोतल ड्रिप चढ़वानी चाहिए तथा बुखार को कम करने व नक्सीर के उपचार की विस्तार से जानकारी लेने व चिकित्सा के लिए तुरन्त पशु चिकित्सक से सलाह लें।

पानी व्यवस्था

इस मौसम में पशुओं को भूख कम लगती है और प्यास अधिक. पशुपालको पशुओं को पर्याप्त मात्रा में दिन में कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिए. जिससे शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करने में मदद मिलती है. इसके अलावा पशु को पानी में थोड़ी मात्रा में नमक एवं आटा मिलाकर पानी पिलाना चाहिए।

पशु आहार

गर्मी के मौसम में दुग्ध उत्पादन एवं पशु की शारीरिक क्षमता बनाये रखने की दृष्टि से पशु आहार का भी महत्वपूर्ण योगदान है. गर्मी के मौसम में पशुओं को हरे चारे की अधिक मात्रा उपलब्ध कराना चाहिए. इसके दो लाभ हैं, एक पशु अधिक चाव से स्वादिष्ट एवं पौष्टिक चारा खाकर अपनी उदरपूर्ति करता है, तथा दूसरा हरे चारे में 70-90 प्रतिशत तक पानी की मात्रा होती है, जो समय-समय पर जल की पूर्ति करता है. प्राय: गर्मी में मौसम में हरे चारे का अभाव रहता है. इसलिए पशुपालक को चाहिए कि गर्मी के मौसम में हरे चारे के लिए मार्च, अप्रैल माह में मूंग , मक्का, काऊपी, बरबटी आदि की बुवाई कर दें जिससे गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा उपलब्ध हो सके. ऐसे पशुपालन जिनके पास सिंचित भूमि नहीं है, उन्हें समय से पहले हरी घास काटकर एवं सुखाकर तैयार कर लेना चाहिए. यह घास प्रोटीन युक्त, हल्की व पौष्टिक होती है.

सोयाबीन की कृषि कार्यमाला

बीजोपचार

बीज को फफूंदनाशक दवा थायरम 75 डब्ल्यू.पी. एवं कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. दवा को 2:1 के अनुपात में मिलाकर 3 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें या थायरम 37 प्रतिशत + कार्बाक्सिन 37 प्रतिशत, 2 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से या ट्राइकोडर्मा नामक जैविक फफूंदनाशक की 3 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर सकते हैं।

उर्वरक एवं खाद

सामान्यत: 40 कि.ग्रा. यूरिया, 375 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 70 कि.ग्रा. पोटाश की मात्रा का उपयोग करें।

बुवाई का तरीका

कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. हो । कम ऊंचाई वाली जातियों या कम फैलने वाली जातियों को 30 से.मी. की कतार से कतार की दूरी पर बोयें। बुवाई का कार्य दुफन, तिफन या सीडड्रिल से ही करें।

मेढ़- नाली विधि एवं चौड़ी पट्टी-नाली विधि से बुवाई करने से सोयाबीन की पैदावार में वृद्धि पायी गयी है। एवं नमी संरक्षण तथा जल निकास में भी प्रभावी पायी गयी है।

अधिक फैलने वाली जातियों की 3 से 4 लाख के आसपास पौध संख्या एवं कम फैलने वाली जातियों की 4 से 6 लाख पौध संख्या प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है।

सामान्य तरीके से बुवाई के बाद 20-20 मीटर की दूरी पर ढाल के अनुरूप जल निकास नालियाँ अवश्य बनायें, जिससे अधिक वर्षा की स्थिति में जल भराव की स्थिति पैदा न हो। मेढ़-नाली विधि एवं चौड़ी पट्टी-नाली विधि की बुवाई, जल निकास में भी प्रभावी पायी गयी हैं।

लाभकारी अंतरवर्तीय फसलें

सोयाबीन+मक्का (चार कतार: दो कतार)
या सोयाबीन+अरहर (चार कतार : दो कतार)
या सोयाबीन+ज्वार (चार कतार : दो कतार)
या सोयाबीन + कपास (चार कतार : एक कतार)

लाभकारी फसल चक्र

सोयाबीन गेहूं, सोयाबीन-अलसी, सोयाबीन - चना, सोयाबीन - आर्किल मटर

कटाई, गहाई एवं भंडारण

फसल की कटाई तब करें जब 95 प्रतिशत फलियां भूरी पड़ जायें और पत्तियाँ झड़ जायें।

खरपतवार नियंत्रण

20-25 दिन में फसल से खरपतवार निकाल दें। मजदूरों द्वारा हाथ से निंदाई करवाने के परिणाम अच्छे मिले हैं। परंतु मजदूरों की कमी, वर्षा का अंतराल एवं जमीन की स्थिति से हाथ की निंदाई खरीफ मौसम में कभी-कभी कठिन हो जाती है अत: यांत्रिक विधियों में सी.आई.ए.ई. भोपाल द्वारा निर्मित उन्नत हैंड हो या बैलों से चलने वाला कुल्पा या डोरा से भी नींदा नियंत्रण कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार रसायनिक नींदानाशकों का उपयोग भी करें।

खरपतवारों से सुरक्षा

बोनी से पूर्व

फ्लूक्लोरोलिन 45 ई.सी.की 1-1.5 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव प्रति हे. बोनी से पूर्व नम मिट्टी में छिड़क दें।

बोनी से बाद अंकुरण से पूर्व

डायक्लोसुलम 84 डब्ल्यू. डी.जी. 22 ग्रा. क्रियाशील अवयव प्रति हे. या एलाक्लोर 50 ई.सी.का 2 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव या पेन्डिमिथालिन ई.सी. 1 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव या एसिटाक्लोर 90 ई.सी. 2 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव या मेटलाक्लोर 50 ई.सी. 1 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव या क्लोमेजोन 50 ई.सी. 1 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव, प्रति हे. के हिसाब से बोनी के बाद एवं अंकुरण के पूर्व छिड़काव करने से खरपतवार नियंत्रण सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

बोनी के बाद

सोयाबीन की बोनी के 15-20 दिन के बीच खड़ी फसल में इमेजाथायपर नामक दवा का 75 ग्राम क्रियाशील अवयव प्रति हे. छिड़कने से सभी प्रकार के खरपतवार का नियंत्रण सफलतापूर्वक किया जा सकता है। जहां पर केवल संकरी पत्ती के नींदा हों वहां क्विजालोफाप इथिल 50 ग्राम क्रियाशील अवयव या फेनोक्साप्राप 10 ई.सी. 75 ग्राम क्रियाशील अवयव प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। इन दवाओं को 500-700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव स्प्रेयर में फ्लड जेट नॉजल या फ्लैट फैन नॉजल लगाकर करें। भूमि में नमी रहने से अच्छे परिणाम मिलते हैं।

134 रनों से मैच जीतकर वेस्टइंडीज ने रचा इतिहास

टी-20 वर्ल्ड कप में लगाई रिकॉर्ड्स की झड़ी

नईदिल्ली, एजेंसी। वेस्टइंडीज की टीम ने युगांडा के खिलाफ 134 रनों से जीत दर्ज की है। युगांडा के बल्लेबाज वेस्टइंडीज की मजबूत गेंदबाजी के आगे टिक नहीं पाए और आउट हो गए।

मैच में वेस्टइंडीज के कप्तान रोवमैन पॉवेल ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। वेस्टइंडीज की टीम ने बैटिंग करते हुए 173 रन बनाए। जिसके जवाब में युगांडा की टीम 39 रनों पर ऑलआउट हो गई। मैच जीतकर वेस्टइंडीज ने कई बड़े रिकॉर्ड्स बना दिए हैं।

वेस्टइंडीज की टीम ने युगांडा के खिलाफ 134 रनों से जीत दर्ज की है, जो टी20 वर्ल्ड कप के इतिहास में दूसरी सबसे बड़ी जीत है। टी20 वर्ल्ड कप में सबसे बड़ी जीत हासिल करने का रिकॉर्ड श्रीलंका के नाम है।

श्रीलंका ने टी20 वर्ल्ड कप 2007 में केन्या के खिलाफ 172 रनों से मैच जीता था। साउथ अफ्रीका की टीम टी20 वर्ल्ड कप में सबसे बड़ी जीत हासिल करने के मामले में तीसरे नंबर पर है। अफ्रीका ने स्कॉटलैंड के खिलाफ टी20 वर्ल्ड कप 2009 में 130 रनों से मैच जीता था।

अकील हुसैन ने हासिल किए पांच विकेट

वेस्टइंडीज के लिए मैच में अकील हुसैन ने कमाल की गेंदबाजी की। उनकी कातिलाना बॉलिंग के आगे युगांडा के बल्लेबाज टिक नहीं पाए और आउट हो गए। उन्होंने मैच के चार ओवर में 11 रन देकर 5 विकेट अपने नाम किए हैं। टी20 वर्ल्ड कप में वेस्टइंडीज के किसी भी बॉलर की ये बेस्ट बॉलिंग फिगर है।

टी-20 विश्व कप में सबसे बड़ी जीत दर्ज करने वाली टीमों की लिस्ट

172 - श्रीलंका, 2007
134 - वेस्टइंडीज, 2024*
130 - साउथ अफ्रीका, 2009
130 - अफगानिस्तान, 2021
125 - अफगानिस्तान, 2024

पहली बार इतने रनों से जीता मैच

वेस्टइंडीज की टीम ने 134 रनों से मैच जीतकर इतिहास रच दिया है। वेस्टइंडीज ने पहली बार कोई टी20 इंटरनेशनल मैच 100 प्लस रनों से जीता है। इससे पहले वेस्टइंडीज की टीम ने टी20 वर्ल्ड कप 2014 में पाकिस्तान के खिलाफ मैच 84 रनों से अपने नाम किया था,. जो उसकी सबसे बड़ी जीत थी।

टी-20 वर्ल्ड कप:2024

रोवमैन पॉवेल के बल्ले से निकला टी20 वर्ल्ड कप का सबसे लंबा छक्का

क्रिकेट में छक्के मारने की बात आती है तो सबसे पहले वेस्टइंडीज के बल्लेबाजों का ध्यान आता है। कभी विव रिचर्ड्स छक्के मारने के उस्ताद थे तो फिर क्रिस गेल आए। आज भी वेस्टइंडीज की टीम में ऐसे बल्लेबाज हैं जो गेंद से स्टेडियम से

बाहर भेजने का दम रखते हैं। टी20 वर्ल्ड कप 2024 में सबसे लंबा छक्का मारने का रिकॉर्ड भी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज के नाम दर्ज हो गया है।

वेस्टइंडीज के कप्तान रोवमैन पॉवेल ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 का सबसे लंबा छक्का जड़ा है। उन्होंने युगांडा के खिलाफ मुकाबले में यह किया। 11वें ओवर की चौथी गेंद पर पॉवेल क्रीज से बाहर निकले। उनका बैलेंस ठीक नहीं था। वह गेंद की पिच तक भी नहीं पहुंचे थे। इसके बाद भी बल्ला चला दिया। गेंद बल्ले के बीच में लगी और मीडिया स्टैंड्स के ऊपर से स्टेडियम के बाहर चली गई। इस छक्के की लंबा 107 मीटर थी।

फिल साल्ट को छोड़ा पीछे

रोवमैन पॉवेल ने इस टी20 वर्ल्ड कप में सबसे लंबा छक्का मारने के मामले में फिल साल्ट को पीछे छोड़ दिया है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले में इंग्लैंड के साल्ट ने 106 मीटर लंबा छक्का मारा था।

मिचेल मार्श के छक्के ने कर दिया भारी नुकसान

नईदिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान मिलेच मार्श ने छक्का लगाकर टी20 वर्ल्ड कप 2024 में भारी नुकसान कर दिया. दरअसल मार्श के छक्के से स्टेडियम में लगे सोलर पैनल के परखच्चे उड़ गए. टी20 विश्व कप का 17वां मुकाबला ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच बारबाडोस के केंसिंग्टन ओवल में खेला गया था. इसी मैच में मार्श के छक्के से भारी नुकसान हुआ, जिसका वीडियो भी सामने आया है. मार्श के इस छक्के का वीडियो आईसीसी ने आधिकारिक सोशल मीडिया के ज़रिए शेयर किया. वीडियो में देखा जा सकता है कि मार्श ज़ोर लगाकर छक्का लगाते हैं और गेंद स्टेडियम के स्टैंड्स के छत पर लगे सोलर पैनल से टकराती है. गेंद के टकराते ही सोलर पैलन टूट जाता है. आईसीसी ने इस वीडियो को कैप्शन देते हुए लिखा, मिचेल मार्श ने केंसिंग्टन ओवल पर निशान छोड़ दिया. बता दें कि मार्श ने यह छक्का पहली पारी के 9वें ओवर की पांचवीं गेंद पर इंग्लिश स्पिनर आदिल रशीद के ऊपर लगाया था. मार्श अच्छी लय में दिखाई दिए थे. उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ मुकाबले में 25 गेंदों में 2 चौके और 2 छक्कों की मदद से 35 रनों की पारी खेली थी.

अर्जेंटीना कोपा अमेरिका का दावेदार है :मेसी

ब्यूनस आयर्स, एजेंसी। अर्जेंटीना के कप्तान लियोनल मेसी ने अमेरिका में होने वाले कोपा अमेरिका कप के लिए अर्जेंटीना को प्रबल दावेदार बताया है। मौजूदा विश्व कप और कोपा अमेरिका चैंपियन अपने खिताब बचाओ अभियान की शुरुआत 20 जून को कनाडा के खिलाफ मैच से करेगा। इसके बाद ग्रुप चरण में उसे चिली और पेरू से खेलना होगा। मेसी ने अर्जेंटीना न्यूज सर्विस इन्फोबे से कहा, मुझे लगता है कि अर्जेंटीना हमेशा दावेदार रहा है।

सफलता की मौजूदा अवधि से पहले भी अर्जेंटीना ब्राजील की तरह दावेदार था। यह कोपा अमेरिका भी अपवाद नहीं होगा। 36 वर्षीय इंटर मियामी फॉरवर्ड ने कहा,मुझे लगता है कि सभी दक्षिण अमेरिकी टीमें इस समय काफी ताकतवर हैं। उरुग्वे, कोलंबिया, इक्वाडोर सभी बहुत अच्छी हैं। हर मैच एक कड़ा मुकाबला होगा और यह एक मुश्किल टूर्नामेंट होगा। अर्जेंटीना दुनिया के सबसे पुराने महाद्वीपीय फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए अपनी तैयारियों को इक्वाडोर और ग्वाटेमाला के खिलाफ नौ और 14 जून को मैत्री मैचों से अंतिम रूप देगा।

FC में जीत दर्ज करने वाली बनीं पहली भारतीय

फाइटर पूजा तोमर ने रचा इतिहास

नई दिल्ली, एजेंसी। पूजा तोमर अल्टीमेट फाइटिंग चैंपियनशिप (यूएफसी) में जीत दर्ज करने वाली भारत की पहली मिश्रित मार्शल आर्ट फाइटर बन गई है। पहली बार इस तरह की प्रतियोगिता में भाग ले रही पूजा ने यूएफसी लुइसविले में शनिवार को स्ट्रॉवेट (52 किग्रा) मुकाबले में ब्राजील की रेयान डॉस सैंटोस पर 30-27, 27-30, 29-28 से विभाजित निर्णय से जीत हासिल की।

इतिहास रचने के बाद पूजा ने क्या कहा?

पूजा ने मुकाबले के बाद कहा,'यह केवल मेरी जीत नहीं है। यह भारत के सभी प्रशंसकों और भारतीय फाइटर की जीत है। इससे पहले सभी सोचा करते थे कि भारतीय फाइटर चुनौती पेश नहीं कर सकते हैं। मैं केवल जीत के बारे में सोच रही थी और मैंने दिखाया कि भारतीय फाइटर हारने वालों में शामिल नहीं हैं।'

'साइक्लोन' के नाम से मशहूर 30 वर्षीय पूजा ने पिछले साल अक्टूबर में यूएफसी के साथ अनुबंध किया था और इस तरह से वह मिश्रित मार्शल आर्ट्स की सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली भारत की पहली महिला बन गई। अंशुल जुबली और भरत कंडारे ने यूएफसी में विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के बुधाना गांव में जन्मी पूजा पांच बार की राष्ट्रीय वुशु चैंपियन हैं और कराटे और ताइक्वांडो में भी भाग लेती रही है। पूजा ने कहा,'मुझे जीत की पूरी उम्मीद थी और मैंने काफी आक्रमण किया। लेकिन मैं अपना शत प्रतिशत प्रदर्शन नहीं कर पाई। दूसरे राउंड में मैं दबाव महसूस कर रही थी। मुझे अभी काफी सुधार करने की जरूरत है।'

कैसा रहा पूजा और डॉस सेंटोस का मैच?

दोनों के बीच की फाइट बहुत ही शानदार रही। पूजा और उनकी विरोधी दोनों ने ही अपने-अपने दमखम दिखाए। पहले राउंड में पूजा ने जबरदस्त किक मारे और दबदबा बना लिया। उनकी ये किकें डॉस के शरीर पर सीधे लग रहीं थीं।

दूसरे राउंड में डॉस ने वापसी की। वो लगातार आगे बढ़ रहीं थीं और पूजा को पीछे हटकर वार करने के लिए मजबूर कर रहीं थीं। इस राउंड में ब्राजीलियाई खिलाड़ी ने भी पूजा की तरह ही लात लगाने की तरकीब अपनाई और सफल भी रहीं। दोनों महिला फाइटर्स ने जमकर लड़ाई की। आखिरी राउंड बहुत ही रोमांचक था और बराबरी का रहा, लेकिन आखिर में पूजा ने तीसरा राउंड जीता और पहली बार यूएफसी में जीत हासिल की।

भारतीय महिला हॉकी टीम जर्मनी से 2-4 से हारी

लंदन, एजेंसी। भारतीय महिला हॉकी टीम को जर्मनी के खिलाफ एफआईएच प्रो लीग 2023/24 में कड़े संघर्ष में 2-4 से हार का सामना करना पड़ा। सुनेलिता टोप्पो (9') और दीपिका (15') ने भारत के लिए गोल किये जबकि विक्टोरिया हस (23, 32), स्टाइन कुर्ज़ (51) और जूल ब्लूएल (55) ने जर्मनी के लिए गोल दागे। जर्मनी ने पहले क्वार्टर में दो गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए जीत हासिल की। भारतीय गोलकीपर बीचु देवी खरीबाम ने दूसरे क्वार्टर में कुछ अच्छे बचाव किये और भारत ने आधे समय तक 2-1 की बढ़त बनाये रखी। जर्मनी ने तीसरे क्वार्टर में गोल से स्कोर 2-2 से बराबर कर दिया। जर्मनी ने आखिरी क्वार्टर में दो गोल दागकर मैच 4-2 से अपने पक्ष में कर लिया। भारतीय टीम प्रो लीग के अपने आखिरी मैच में ग्रेट ब्रिटेन से नौ जून को भिड़ेगी।

आमिर खान भीषण गर्मी के बीच

गुजरात के वडोदरा शहर में कर रहे हैं सितारे जमीन पर की शूटिंग!

देश के सबसे बड़े सुपरस्टार आमिर खान ने दर्शकों को कई बेहतरीन ब्लॉकबस्टर फ़िल्में दी हैं। दुनिया भर में उनके फैंस हैं और लोग उन्हें फ़िल्मों में देखने के लिए बेसब्री से इंतज़ार करते हैं। फिलहाल, फैंस उनकी अगली फिल्म सितारे ज़मीन पर के बारे में और ज्यादा जानने के लिए एक्साइटेड हैं। ऐसे में आ रही ताज़ा खबर यह है कि आमिर खान वडोदरा के गर्म मौसम में फिल्म की शूटिंग करने में बिजी हैं। इंडस्ट्री के एक इंडिपेंडेंट सोर्स के मुताबिक, आमिर खान सितारे ज़मीन पर की लगातार शूटिंग कर रहे हैं। दिल्ली में शूटिंग खत्म करने के बाद, अब वे वडोदरा में शूटिंग कर रहे हैं। चिलचिलाती गर्मी के बावजूद, सुपरस्टार शेड्यूल पर टिके रहने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं।

छोटे नवाब के साथ पर्दे पर फरमाएंगी इश्क!

बॉलीवुड में डेब्यू करने को तैयार साउथ अभिनेत्री श्रीलीला

साउथ अभिनेत्री श्रीलीला ने महेश बाबू, पवन कल्याण और बालकृष्ण जैसे कई बड़े सितारों के साथ फिल्मों में काम किया है। अब वे बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली हैं। श्रीलीला साउथ की उभरती हुई अभिनेत्री हैं। अब वे मुख्य नायिका के तौर पर भी अभिनय का जादू चला रही हैं। श्रीलीला ने लगातार कई प्रोजेक्ट्स के साथ टॉलीवुड में अपना दबदबा बना लिया।

कई फिल्मों में वे मुख्य भूमिका निभाते हुए साउथ के कई सुपरस्टार्स के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। वहीं, इस बीच अब उनकी सफलता के आसमान पर एक और सितारा चमकने वाला है। साउथ सिनेमा के अलावा श्रीलीला अब जल्द ही हिंदी सिनेमा में भी अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरने वाली हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, श्रीलीला जल्द ही हिंदी सिनेमा में डेब्यू करेंगी। खबर है कि श्रीलीला सैफ अली खान के बेटे इब्राहिम अली खान के सह्वाथ फिल्म दिलेर में नजर आएंगी, जिसका निर्देशन कुणाल देशमुख करेंगे। कहा जा रहा है कि दिलेर के निर्माता तेलुगु सनसनी के साथ बातचीत कर रहे हैं।

शहजादा की फीस छोड़ दी थी कार्तिक ने , बन गए थे प्रोड्यूसर

कार्तिक आर्यन पिछले कुछ समय से काफी अच्छी फिल्में दे रहे हैं। उनकी फिल्मों को दर्शक काफी पसंद कर रहे हैं। अब वह चंदू चैम्पियन फिल्म में नजर आने वाले हैं। इसी बीच कार्तिक ने हाल ही में एक्टर्स की फीस को लेकर कमेंट किया है। कार्तिक का कहना है कि एक्टर्स की फीस हर फिल्म के हिसाब से फिक्स होती है।

दरअसल, पिछले कुछ समय से ऐसा कहा जा रहा था कि एक्टर्स की फीस और उनके टीम यानी मेकअप, हेयरड्रेसर, स्टाइलिस्ट की डिमांड की वजब से फिल्मों के बजट में बढ़ोतरी हो गई है।

तो अब कार्तिक ने इस पर कहा कि उनकी पिछले साल रिलीज हुई कॉमेडी फिल्म शहजादा के लिए उन्होंने अपनी फीस छोड़ दी थी क्योंकि फिल्म को आर्थिक परेशानियों से गुजरना पड़ा था। कार्तिक फिर इस फिल्म के प्रोड्यूसर बन गए थे जिसे रोहित धवन ने डायरेक्ट किया था। इस फिल्म में कृति सेनन लीड रोल में थीं। कार्तिक ने आगे कहा, मुझे फिल्म में प्रोड्यूसर का क्रेडिट मिला था क्योंकि मैंने फीस छोड़ दी थी। मैंने तब यह किया जब कोई इस बारे में बात नहीं कर रहा था।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में छुड़ाई गईं 21 नाबालिग लड़कियां, काम दिलाने के नाम पर हुई ट्रैफिकिंग

नई दिल्ली, एजेंसी। किस हाल में रही होंगी ये नाबालिग लड़कियां। अंदाजा इस बात से ही लग जाएगा कि कुछ लड़कियों को कमरे से ही बाहर निकालने में 5 घंटे से अधिक वक्त लग गया। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, दिल्ली पुलिस और बचपन बचाओ आंदोलन के साथ मिलकर चलाए गए ऑपरेशन में 21 नाबालिगों को बचाया गया। जिन जगहों पर इन नाबालिगों को रखा गया था वहां अंदर से दवाइयां, प्रेग्नेंसी किट, लड़कियों के दस्तावेज और 10 लाख रुपये भी मिले, जिन्हें पुलिस ने आगे की जांच के लिए जब्त कर लिया है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अनुसार दिल्ली के एलजी ऑफिस से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की गई थी। ताकि जिला अधिकारियों को आगे बढ़ने और उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के शकूरपुर में एक घर में बंद पाई गई पांच लड़कियों को बचाने के लिए दरवाजा खोलने का निर्देश दिया जा सके। बचाव अभियान का नेतृत्व करने वाले एनसीपीसीआर के अध्यक्ष प्रियांक कानूनगो ने कहा कि आयोग बीबीए की शिकायत पर कार्रवाई कर रहा था, जिसमें उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला था कि प्लेसमेंट एजेंसियों की आड़ में काम करने वाले तस्करों के माध्यम से झारखंड और बिहार जैसे राज्यों से नाबालिगों को घरेलू काम के लिए लाया गया था।

हरियाणा से पानी नहीं छोड़ा गया तो एक-दो दिन में दिल्ली में होगा बड़ा जल संकट: आतिशी

नई दिल्ली। दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह को एक बार फिर पत्र लिखकर कहा है कि यदि पड़ोसी राज्य दिल्ली के लिए अतिरिक्त पानी नहीं छोड़ता है तो राष्ट्रीय राजधानी को अगले एक-दो दिन में बड़े जल संकट का सामना करना पड़ेगा। आतिशी ने पत्र में लिखा, पिछले कुछ दिनों से हरियाणा मुनक नहर में पर्याप्त पानी नहीं छोड़ रहा है। इसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय राजधाना के लोगों को अनुचित कष्ट उठाना पड़ रहा है। पत्र में कहा गया है कि मई 2018 में अपर यमुना रिवर बोर्ड की 53वीं बैठक में हुए समझौते के अनुसार, मुंडक नहर के जरिये दिल्ली को 1,050 क्यूसेक (56.8 करोड़ गैलन प्रतिदिन) पानी दिया जाना था। रास्ते में पानी के नुकसान को देखते हुए 1,013 क्यूसेक (54.8 करोड़ गैलन प्रतिदिन) पानी दिल्ली पहुंचना चाहिये। मंत्री ने अपने पत्र में लिखा कि दिल्ली के बवाना में, जहां मुंडक नहर का पानी केंद्रशासित प्रदेश में प्रवेश करता है, इसकी मात्रा मापी गई थी। अपर यमुना रिवर बोर्ड के प्रतिनिधियों ने पिछले सप्ताह इन फ्लो मीटरों की जांच की थी। गर्मी के समय में भी बवाना में दिल्ली को मिलने वाले पानी की औसत मात्रा 980 से 1,030 क्यूसेक के बीच होती है। लेकिन इस बार इसकी मात्रा 840 क्यूसेक तक घट गई है। उन्होंने बताया कि इतनी कम मात्रा में पानी मिलने से दिल्ली के सात जल शोधन संयंत्र यहां के लोगों के लिए प्रयाप्त मात्रा में जल शोधन करने में समर्थ नहीं हैं। उन्होंने कहा कि यदि हरियाणा आज ही पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं छोड़ता है तो अगले एक-दो दिन में दिल्ली में बड़ा जल संकट होगा। आतिशी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री से दिल्ली के लिए मुंडक नहर में कम से 1050 क्यूसेक पानी छोड़ने का अनुरोध किया।

सावधान दिल्लीवालो! 46 डिग्री तक जाएगा पारा... आज से सूरज चाचा फिर निकालेंगे तेल

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्लीवालों को आज से तेज गर्मी का सामना करना पड़ेगा। शनिवार को मौसम ने कुछ राहत दी और तापमान 41.2 डिग्री सेल्सियस रहा। राजधानी में बहुत हल्की बारिश, धूल भरी आंधी का अनुमान था मगर ऐसा नजर नहीं आया। हवाएं जरूर चलीं, बादल भी छाए और तापमान भी गिरा। अब 10 जून से 13 जून तक दिल्ली में तापमान 46 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचेगा। अगले हफ्ते हीटवेव की वापसी होगी। शनिवार को अधिकतम तापमान 41.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो शुक्रवार के मुकाबले 1.8 डिग्री कम था। न्यूनतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस रहा। नजफगढ़ स्टेशन में सबसे ज्यादा तापमान 43.4 रहा, जबकि एक दिन पहले 45.1 डिग्री सेल्सियस था। नरेला में 43.7 डिग्री, पीतमपुरा और पूसा स्टेशन में तापमान 43.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। राजघाट में तापमान कम था, यहां पारा 40.8 डिग्री सेल्सियस पर था।

बंगाल में 8 दिनों से अटका है मॉनसून, 13 से 15 जून के बीच पहुंचेगा बिहार

महाराष्ट्र के लिए रेड अलर्ट जारी

नईदिल्ली, एजेंसी।
दक्षिण-पश्चिम मॉनसून पिछले 8 दिनों से बंगाल के इस्लामपुर में अटका हुआ है। पूर्वी भारत में मॉनसून रुकने के कारण बिहार में इसके समय पर आने के आसार कम हैं। वहीं पश्चिम से दक्षिण की ओर मॉनसून तेजी से बढ़ रहा है। इसी कारण शनिवार को मॉनसून महाराष्ट्र में जहां आगे बढ़ा, वहीं छत्तीसगढ़ और ओडिशा में प्रवेश किया। बिहार में 13 से 15 जून मॉनसून प्रवेश करने की संभावित तिथि है। पूर्वी भारत से ही बिहार में मॉनसून प्रवेश करता है।

मौसम विभाग के अनुसार अरब सागर में मॉनसून का करंट मजबूत है। इसी कारण पश्चिम से दक्षिण की ओर मॉनसून तेजी से बढ़ रहा है। वहीं बंगाल की खाड़ी में मॉनसून का करंट कमजोर रहने के कारण 31 मई से उप हिमालयी क्षेत्र स्थित पश्चिम बंगाल के इस्लामपुर में रुका हुआ है। मौसम विभाग ने उम्मीद जताई है कि 15 जून से बंगाल की खाड़ी में मॉनसून के करंट में सुधार होगा। इसके बाद ही मॉनसून के आगे बढ़ने की संभावना है। इस दौरान अगर बीच में किसी तरह की हलचल होती है, तो मॉनसून पहले भी आगे बढ़ सकता है।

दक्षिण-पश्चिम मॉनसून अपने निर्धारित समय से एक दिन पहले ही 19 मई को अंडमान-निकोबार में प्रवेश किया था। इसके बाद निर्धारित समय से दो दिन पहले ही केरल में 30 मई को प्रवेश किया। इसके बाद से उसका एक हिस्सा पश्चिम भारत से दक्षिण भारत की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इससे निर्धारित समय से दो दिन पूर्व यानी 8 जून को ही छत्तीसगढ़ और ओडिशा में मॉनसून प्रवेश कर गया। जबकि पूर्वी भारत की ओर का दूसरा हिस्सा 31 मई से रुका हुआ है। इसी कारण इस्लामपुर से मॉनसून के आगे बढ़ते ही बिहार में मॉनसून प्रवेश करेगा।

आईएमडी ने महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग में भारी बारिश के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। वहीं, रत्नागिरी के लिए ऑरेंज अलर्ट और पालघर, ठाणे, मुंबई और रायगढ़ के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। पूर्वानुमान में इन क्षेत्रों में गरज के साथ बिजली चमकने और तेज हवाओं के साथ मध्यम से भारी बारिश की भविष्यवाणी की गई है। मुंबई में क्षेत्रीय आईएमडी

कार्यालय ने शनिवार को अलर्ट जारी करते हुए कहा, अगले 3-4 घंटों के दौरान मुंबई, ठाणे, रायगढ़ जिलों में अलग-अलग स्थानों पर गरज के साथ बिजली चमकने और मध्यम से भारी बारिश के साथ 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की संभावना है। पूर्वी राजस्थान में शनिवार को कुछ स्थानों पर गरज और तेज आंधी के साथ हल्की बारिश हुई। इसके साथ ही मौसम में आए बदलाव से अधिकतम तापमान में एक से दो डिग्री सेल्सियस की गिरावट आई है। मौसम विभाग ने यह जानकारी दी। विभाग के अनुसार शनिवार को करौली में अधिकतम तापमान 42.9 डिग्री, धौलपुर में 42.7 डिग्री, जालौर में 42.6 डिग्री, अलवर में 42.2 डिग्री, अंता-बारां में 42.1 डिग्री, बाड़मेर में 41.9 डिग्री, चूरू और वनस्थली में 41.6 डिग्री, जैसलमेर और चित्तौड़गढ़ में 41.5 डिग्री व जोधपुर में 41.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अजमेर, भीलवाड़ा, कोटा में अधिकतम तापमान 41.2 डिग्री तो राजधानी जयपुर में 40.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। एक नए पश्चिमी विक्षोभ के असर के कारण राज्य में गत कई दिनों से तेज आंधी, बादलवाही और बूंदाबांदी का दौर जारी है। राजधानी जयपुर में भी शनिवार शाम गहरे बादल छाए रहे। केरल में दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के लगातार जारी रहने के बीच भारत मौसम विज्ञान विभाग ने शनिवार को राज्य के पांच जिलों में भारी बारिश की संभावाना जताते हुए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। आईएमडी के अनुसार, पथनमथिट्टा के दक्षिणी जिले और कोझिकोड वायनाड, कन्नूर और कासरगोड के उत्तरी जिलों को दिन के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया। मौसम एजेंसी ने राज्य के आठ जिलों के लिए येलो अलर्ट भी जारी किया है, जिसमें तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, अलाप्पुझा, कोट्टायम, इडुक्की, एर्णाकुलम, त्रिशूर और मलप्पुरम में भारी बारिश की चेतावनी दी गई है।

अगर थप्पड़ सही है तो फिर..., महिला सुरक्षाकर्मी के समर्थकों को कंगना का करारा जवाब

नई दिल्ली, एजेंसी।
नवनिर्वाचित सांसद कंगना रणौत ने सीआईएसएफ की महिला कांस्टेबल कुलविंदर कौर के थप्पड़ का समर्थन करने वालों को करारा जवाब दिया है। कहा कि आपको अपनी मनोवैज्ञानिक आपराधिक प्रवृत्तियों की गहराई से जांच करनी चाहिए। नवनिर्वाचित सांसद कंगना रणौत ने उन्हें थप्पड़ मारने वाली महिला कॉन्स्टेबल का पक्ष लेने वालों को करार जवाब दिया है। कंगना ने सोशल मीडिया पर लिखा, हर बलात्कारी, हत्यारा या चोर जब अपराध करता है, तो उसके लिए हमेशा मजबूत भावनात्मक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक या वित्तीय कारण होता है। कोई भी अपराध बिना कारण के नहीं होता है। फिर भी उन्हें दोषी ठहराया जाता है और जेल की सजा सुनाई जाती है। अगर आज आप देश के सभी कानूनों को ताक पर रखकर अपराधियों के साथ अपराध करने के लिए मजबूत भावनात्मक आवेग से जुड़े हैं, तो याद रखें कि आप किसी के निजी क्षेत्र में घुसने, उनकी अनुमति के बिना उनके शरीर को छूने और उन पर हमला करने की सहमति दे रहे हैं। मन की गहराई से आप इस तरह दुष्कर्म और हत्या से भी सहमत हैं, क्योंकि वह भी तो किसी के शरीर पर हमला है। इसमें कौन सी बड़ी बात है। आपको अपनी मनोवैज्ञानिक आपराधिक प्रवृत्तियों की गहराई से जांच करनी चाहिए। मेरा सुझाव है कि कृपया योग और ध्यान करें, वर्ना जिंदगी बेहद कड़वी और बोझिल लगने लगेगी। इतना द्वेष, घृणा और ईर्ष्या न रखें। चंडीगढ़ हवाईअड्डे की सुरक्षा में तैनात सीआईएसएफ की महिला कांस्टेबल कुलविंदर कौर ने बृहस्पतिवार को अचानक कंगना रणौत पर हमला कर दिया था।

शाहीन बाग इलाके में लगी भीषण आग, चार मशहूर रेस्टोरेंट जलकर खाक, कई एलपीजी सिलेंडर फटे

नई दिल्ली, एजेंसी।
शुरुआती जांच के बाद पुलिस को पता चला है कि एसी के आउटर में चिंगारी निकलने के बाद आग लगी। आग के सही कारणों का पता लगाया जा रहा है। स्थानीय लोगों ने आग लगने के बाद दमकल की गाड़ियों को 45 मिनट देर से पहुंचने का आरोप लगाया।

दिल्ली के शाहीन बाग की मशहूर फूड स्ट्रीट 40 फुटा रोड पर शनिवार शाम भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। आग की चपेट में चार बड़े रेस्टोरेंट आ गए। हमेशा भीड़ पटे रहने वाले शाहीन बाग में आग लगी तो अफरा-तफरी मच गई। रेस्टोरेंट में भारी मात्रा में ज्वलनशील पदार्थ के अलावा एलपीजी सिलेंडर रखे हुए थे। एक-एक कर सिलेंडर भी फटने लगे तो मौके पर भगदड़ मच गई। मामले की सूचना पुलिस के अलावा दमकल विभाग को दी गई। खबर मिलते ही पुलिस व दमकल की 15 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। करीब दो घंटे के मशक्कत के बाद किसी तरह आग पर काबू पाया गया। फिलहाल हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। पुलिस व दमकल की टीम जली हुई इमारतों में सर्च ऑपरेशन चलाया। आग से दो मंजिला तीन रेस्टोरेंट के अलावा एक चार मंजिला रेस्टोरेंट पूरी तरह जलकर खाक हो गए। देर रात तक वहां कूलिंग का काम जारी रहा। पुलिस के अलावा दमकल के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर मौजूद रहे।

शुरुआती जांच के बाद पुलिस को पता चला है कि एसी के आउटर में चिंगारी निकलने के बाद आग लगी। आग के सही कारणों का पता लगाया जा रहा है। स्थानीय लोगों ने आग लगने के बाद दमकल की गाड़ियों को 45 मिनट देर से पहुंचने का आरोप लगाया। उनका कहना था कि समय पर यदि गाड़ियां आती तो नुकसान कम होता। पुलिस के मुताबिक शनिवार शाम करीब 5.44 बजे सूचना मिली की शाहीन बाग 40-फुटा रोड पर जायका और जेहरा रेस्टोरेंट में आग लग गई है। सूचना मिलते ही लोकल पुलिस मौके पर पहुंच गई। पीक आवर्स और भीड़ वाला इलाका होने की वजह से दमकल की गाड़ियां कुछ देर से पहुंची तब तक आग ने चार इमारतों को अपनी चपेट में ले लिया था।

गनीमत यह रही कि जिस समय आग लगी, उस समय रेस्टोरेंट में ग्राहक मौजूद नहीं थे। सभी जगह खाना बनाने की तैयारी चल रही थी। आग लगते ही वहां हड़कंम मच गया।

बाइडन की नई प्रतिबंध नीति लाई रंग, अमेरिका-मैक्सिको सीमा पर प्रवासियों की संख्या में आई कमी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका प्रशासन ने अमेरिका-मैक्सिको सीमा पर शरण मांगने वाले प्रवासियों पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस बीच, अमेरिका-मैक्सिको सीमा को गलत तरीके से पार करते हुए पकड़े गए प्रवासियों की संख्या में कमी दर्ज की गई। एक वरिष्ठ अमेरिकी सीमा अधिकारी ने कहा कि यह इस बात का संकेत है कि बाइडन प्रशासन के नए प्रतिबंध कारगार साबित हो रहे हैं। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि अमेरिकी सीमा गश्ती ने अवैध रूप से सीमा पार करने वाले करीब 3,100 लोगों को गिरफ्तार किया, जो पहले के दिनों से लगभग 20 फीसदी कम है। उन्होंने आगे कहा कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि अब ऐसी ही स्थिति बनी रहेगी। हालांकि, हमें लगता है कि शुरुआत में ऐसे आंकड़े आना सफलता का संकेत है। पांच नवंबर को होने वाले चुनावों से पहले आप्रवासन अमेरिकियों के लिए एक अहम और बड़ा मुद्दा बनकर उभरा है, जो व्हाइट हाउस और सदन पर नियंत्रण का फैसला करेगा। यहां राष्ट्रपति जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप के बीच कड़ी टक्कर बनी हुई है। साल 2021 में बाइडन ने पदभार ग्रहण करते हुए ट्रंप की कई नीतियों को बदलने का वादा किया था। वहीं, सीमा पर रिकॉर्ड प्रवासी गिरफ्तारियों के मद्देनजर उन्होंने अपना रुख कड़ा कर लिया है। बाइडन ने बुधवार को एक व्यापक नीति लागू की, जो आम तौर पर अमेरिका-मैक्सिको सीमा पार करने वाले प्रवासियों को शरण लेने से रोकती है। शरण प्रतिबंध में अकेले नाबालिगों, गंभीर चिकित्सा या सुरक्षा खतरों का सामना करने वाले लोगों और तस्करी के पीड़ितों के लिए अपवाद हैं।

पाकिस्तान में पोलियो रोधी अभियान को झटका: 2024 में चौथा मामला आया सामने, देश- दुनिया की बढ़ी चिंता

इस्लामाबाद, एजेंसी।
पाकिस्तान जो अपने पड़ोसी अफ़गानिस्तान के साथ दुनिया के दो बचे हुए पोलियो-स्थानिक देशों में से एक है, ने 16.5 मिलियन से ज़्यादा 5 साल से कम उम्र के बच्चों को टीका लगाने के लिए राष्ट्रव्यापी पोलियो टीकाकरण अभियान शुरू किया है। दक्षिण एशियाई देश में इस साल के जंगली पोलियोवायरस का चौथा मामला सामने आने के बाद, इस बीमारी को खत्म करने के देश के प्रयासों को झटका लगा है। डब्ल्यूएचओ ने कहा कि अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान के इलाकों में जंगली पोलियोवायरस का स्थानिक संक्रमण जारी है, साथ ही कहा कि इन बचे हुए इलाकों में पोलियो को रोकने में विफलता के परिणामस्वरूप बीमारी का वैश्विक स्तर पर फिर से उभार हो सकता है। पाकिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि पाँच दिवसीय टीकाकरण अभियान इस महीने के आखिर में ईद-उल-अज़हा के आगामी मुस्लिम त्योहार के अवसर पर पूरे देश में होने वाले बड़े पैमाने पर सार्वजनिक आंदोलन से पहले शुरू किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, टीकाकरण अभियान पाकिस्तान के 66

जिलों में चलाया जाएगा, जिसमें 33 जिलों में पूर्ण टीकाकरण होगा, जबकि 30 जिलों में आंशिक टीकाकरण होगा। देश के स्वास्थ्य मंत्रालय का हवाला देते हुए, मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान संघीय राजधानी इस्लामाबाद, दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत के 20 जिलों, उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के 23 जिलों, दक्षिणी सिंध प्रांत के 16 जिलों और पूर्वी पंजाब प्रांत के छह जिलों पर केंद्रित है। डॉन की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 का चौथा पोलियो मामला शनिवार (1 जून) को सिंध प्रांत के शिकारपुर जिले से सामने आया। डॉन ने बताया कि पोलियोवायरस का नवीनतम मामला तब सामने आया जब पाकिस्तान सरकार ने हाल ही में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के नए प्रमुख की नियुक्ति की, उनके पूर्ववर्ती ने सप्ताह के दौरान पद छोड़ दिया।इस साल की शुरुआत में, बलूचिस्तान प्रांत से पोलियोवायरस के तीन मामले सामने आए थे। टाइप-1 वाइल्ड पोलियोवायरस (डब्ल्यूपीवी1) का था।

वाइल्ड पोलियोवायरस (डब्ल्यूपीवी) के तीन सीरोटाइप हैं - टाइप 1 (डब्ल्यूपीवी1), टाइप 2 (डब्ल्यूपीवी2) और टाइप 3 (डब्ल्यूपीवी3), और उनमें से दो - डब्ल्यूपीवी2 और डब्ल्यूपीवी3 - का उन्मूलन किया जा चुका है, जबकि डब्ल्यूपीवी1 के उन्मूलन के लिए वैश्विक प्रयास चल रहे हैं।

किम की गंदी हरकत का दक्षिण कोरिया देगा जवाब, प्योंगयांग के विरोध में लाउडस्पीकर से करेगा प्रचार

सियोल, एजेंसी। उत्तर कोरिया अभी तक दक्षिण कोरिया को मिसाइल और परमाणु बम की ही धमकी देता रहा है। लेकिन अब उत्तर कोरिया गंदगी भी फैलाने लगा है। उत्तर कोरिया ने हाल ही में दक्षिणी कोरिया में कूड़ा-कचरा बांधकर 150 गुब्बारे छोड़ दिए थे। इस पर दक्षिण कोरिया भड़क गया। उसने कचरे से भरे गुब्बारे उड़ाने के मामले में सख्त रुख अपनाया है। सियोल का कहना है कि एक बार फिर से व्योंगयांग के विरोध में लाउडस्पीकर के जरिए प्रचार किया जाएगा।

राष्ट्रीय सुरक्षा बैठक में यह फैसला लिया गया। बैठक के बाद दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति कार्यालय ने कहा कि लाउडस्पीकर लगाए जाएंगे और रविवार से प्रसारण शुरू हो जाएगा। इससे उत्तर कोरिया जरूर गुस्सा होगा और जवाबी सैन्य कार्रवाई कर सकता है। दक्षिण कोरिया की सेना ने कहा कि उत्तर कोरिया ने सप्ताह के अंत में एक बार फिर से सैकड़ों कचरे वाले गुब्बारे यहां भेजे। उन्होंने कहा कि मई से लेकर अब तक तीसरी बार ऐसी हरकत की गई है। सेना ने पहले कहा था कि वह इस बात की जांच कर रही है कि गुब्बारों में उत्तर कोरियाई प्रचार सामग्री तो नहीं है। हालिया घटना उत्तर कोरिया के उस बयान के बाद आई है, जिसमें उसने कहा था कि वह दक्षिण में कार्यकर्ताओं की ओर से सीमावर्ती इलाकों में लगातार पर्चे और अन्य कूड़ा-कचरा फैलाने के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करेगा।

चीन का नेपाल में नया खेल- तेल और गैस की खोज के लिए काठमांडू को फंसाया

बीजिंग, एजेंसी। नेपाल, जो पहले कई आर्थिक और भू-राजनीतिक कारकों के कारण चीन की ओर पूरी तरह से झुकाव रखने में हिचकिचा रहा था, अब अपने बड़े उत्तरी पड़ोसी की ओर झुकता हुआ दिखाई दे रहा है, जिससे उसे हिमालयी देश के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को और बढ़ाने का अवसर मिल रहा है। फिर भी नेपाल पर नज़र रखने वालों को सबसे ज़्यादा चिंता इस बात की है कि हिमालयी देश चीन को एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करने का मौक़ा दे रहा है जो अब तक अछूता था- तेल और गैस की खोज में। 1985 में, नेपाल ने तेल और गैस की खोज के लिए विदेशी कंपनियों को आमंत्रित किया था। शेल और ट्राइटन एनर्जी ने भूकंपीय सर्वेक्षण किया था और तेल की संभावना का परीक्षण करने के लिए 3520 मीटर का कुआँ खोदा था, लेकिन इससे कोई परिणाम नहीं निकला। यहाँ तक कि चीन बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव को लेकर नेपाली लोगों में असंतोष को बढ़ावा दे रहा है। मई 2017 में, प्रचंड की अध्यक्षता वाले नेपाल और चीन ने क्रम्ह पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। दोनों विदेशी कंपनियों ने 1990 में नेपाल में तेल और गैस अन्वेषण बोलियों से अपना नाम वापस ले लिया था। द राइजिंग नेपाल ने कहा कि हालांकि, मई 2024 के शुरुआती हफ़्तों में, लगभग 20 चीनी इंजीनियरों की एक टीम ने 45 नेपाली तकनीशियनों के साथ दैलेख में तेल की खुदाई शुरू की, जो काठमांडू से 644 किलोमीटर से अधिक दूर है। नेपाली सरकार समर्थित अंग्रेजी भाषा के अख़बार ने कहा कि पेट्रोलियम उत्पादों की खोज के लिए उपकरण और उपकरण इस साल अप्रैल में ट्रकों में चीन से हिमालयी देश में पहुँचे। एक अन्य नेपाली अख़बार, कांतिपुर ने कहा कि चीनी और नेपाली तकनीशियनों ने भूकंपीय, भूवैज्ञानिक, मैग्नेटोटेल्यूरिक और भू-रासायनिक नमूना चार सर्वेक्षण किए। कांतिपुर ने कहा कि उन्होंने दूसरे चरण में

तेल ड्रिल मशीनों के माध्यम से अन्वेषण के लिए जाने से पहले एक व्यवहार्यता अध्ययन भी किया। द राइजिंग नेपाल के अनुसार, अन्वेषण के लिए, नेपाल सरकार के खान और भूविज्ञान विभाग और चीनी सरकार की भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण कंपनी के बीच 2019 में पेट्रोलियम उत्पादों की खोज और निष्कर्षण के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह 1985 के बाद से नेपाल में पहला तेल और गैस अन्वेषण होगा, जब हिमालयी देश में तेल की खोज के लिए इसी तरह के प्रयास से कोई परिणाम नहीं निकला था।पर्यवेक्षक इस नवीनतम परियोजना को चीन द्वारा नेपाल में अपने प्रभाव को और बढ़ाने के प्रयास के रूप में देखते हैं, जो एक छोटा हिमालयी राष्ट्र है, जिसे वर्तमान में पुष्प कमल दहल प्रचंड द्वारा चलाया जाता है, जिनका चीन के प्रति झुकाव सर्वविदित है। इस वर्ष मार्च में, उन्होंने नेपाली कांग्रेस, एक उदार लोकतांत्रिक पार्टी को छोड़कर, अपनी सरकार चलाने के लिए चीन के कट्टर सहयोगी के पी शर्मा ओली, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूनाइटेड मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के प्रमुख को नियुक्त किया। चीन ने प्रचंड के नेतृत्व वाली कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी केंद्र) और के पी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूनाइटेड मार्क्सवादी-लेनिनवादी) की गठबंधन सरकार को बधाई देने में देर नहीं लगाई।यह कम्युनिस्ट गठबंधन के पुनरुत्थान का प्रतीक है, जिसे पहली बार 2017 में काठमांडू में तत्कालीन चीनी राजदूत यू होंग की सहायता से नेपाल में बनाया गया था।

स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रकः- देवेन्द्र मालवीय द्वारा श्री सिंध्दी विनायक प्रिंटर्स 26 बी देशबंधु परिसर प्रेस काम्प्लेक्स झोन 1 एम पी नगर भोपाल म.प्र. से मुद्रित एवं 773 / 19 मेघदूत नगर इंदौर म.प्र. से प्रकाशित सम्पादक डॉ. देवेन्द्र मालवीय
कार्यालय पताः-एच. 21 अंकित अपार्टमेंट ब्रजेश्वरी एनएक्स, इंदौर मध्यप्रदेश मोः- 98276-22204 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र इंदौर रहेगा।

दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त सूचनाए, विचार, आलेख विभिन्न समाचार के स्त्रोत एवं संकलन लेखकों के व संकलनकर्ता के स्वंय जिनका संकलन विभिन्न एजेंसियों, के माध्यम से किया गया है, अतः समस्त प्रकार के प्रकाशन हेतु संपादक, प्रकाशक, मुद्रक का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहमत होना अनिवार्य नही है।